१.३.१ संस्था, संस्कृत साहित्य और शास्त्र परंपरा में स्त्री-पुरुष, पर्यावरण- स्थिरता - मानवीयूल्य- वृत्तिनीति-पारंपरिक शास्त्राधिगम प्रणालियों के साथ समकालीन विषयों के सर्वव्यापी भागों को एकीकृत करता है।

विश्वविद्यालय के शास्त्रीय पाठ्यक्रम में विभिन्न स्थलों में स्त्री -पुरुष स्थिरता, मानवीय मूल्यों और व्यवहारिक नैतिकता के अंश समाहित हैं। शास्त्रीय ग्रंथों में अंतः विषयकपद्धतियों का अनुसरण करते हुए आधुनिक विषयों का भी वैकल्पिकरूप में स्वतंत्रतया समावेश हैं तथा पारंपरिक पाठ्यक्रम में भी सभी प्रकार के पक्षों को समाविष्ट किया गया है ।

- पाठ्यक्रम में विविध स्थलों पर स्त्री पुरुष संतुलन विषयक पक्ष निर्धारित हैं। शास्त्री प्रथम वर्ष में ऋग्वेद पाठ्यक्रम के चतुर्थ प्रश्न पत्र में, ऋग्वेद संहिता के निर्धारित पाठ्यांश में वागाम्भृणी सूक्त तथा देवी सूक्त हैं, जो नारी शक्ति की दिव्य प्रकृति का वर्णन करता है। इसी प्रकार पुराण इतिहास पाठ्यक्रम के शास्त्री प्रथम वर्ष के पंचम प्रश्न पत्र में दुर्गासप्तशती निर्धारित है जिसमें स्त्रीशक्ति की अभिव्यक्ति विविध रूपों मे की गई है। ऋग्वेद संहिता के निर्धारित पाठ्यांश में यमयमी संवाद और शास्त्री के पाठ्यांश अभिज्ञानशाकुंतल में स्त्री और पुरुष के लिए व्यावहारिक नियमों का प्रतिपादन किया गया हैं। शुक्ल यजुर्वेद के पाठ्यक्रम में पुरुष सूक्त, धर्मशास्त्र पाठ्यक्रम में आचार्य द्वितीय वर्ष के प्रथमपत्र में पुरुषार्थचिंतामणि ग्रंथ और मनुस्मृति में स्त्रियों और पुरुषों के कर्तव्यों और दायित्वों का अनुपम प्रतिपादन है। पुराण इतिहास पाठ्यक्रम में, शास्त्री द्वितीय वर्ष के पंचम पत्र में, वाल्मीकि रामायण और महाभारत निर्धारित हैं जहां स्त्री और पुरुष से संबंधित विषयों को पाठ्यक्रम में समाहित किया गया है। सांख्य दर्शन में स्त्री-पुरुष के संबंध के आलोक प्रकृति और पुरुष के समन्वय का अध्ययन सांख्यकारिका एवं भगवद्गीता ग्रन्थ सांख्ययोग के पाठ्यक्रम का अंश हैं । न केवल स्त्री और पुरुष की, बल्कि बृहन्नला,शिखंडी जैसे पात्रों और संस्कृत साहित्य में समागत अन्य पात्रों के चरित्र का अध्ययन भी पाठ्यक्रम में निवेश सभी के प्रति समभाव का बोध करानें में सक्षम है।
- पर्यावरण चेतना पाठ्यक्रम में सर्वत्र विद्यमान है । शास्त्री प्रथम वर्ष के प्रथम पत्र में अनिवार्य रूप से अभिज्ञान शाकुंतल निर्धारित है, जहां या सृष्टिःस्रष्टुराद्या.... के मंगल पद्य से लेकर भरत वाक्य तक मानव स्वभाव से व्यंजित करते हुए पर्यावरण चेतना को वैज्ञानिक रूप से प्रतिपादित किया गया है। ज्योतिष शास्त्र विषयक पाठ्यक्रम फलितज्योतिष में आचार्य प्रथम वर्ष के तृतीय और चतुर्थ पत्र में बृहत् संहिता है, जिसमें भूगर्भ विज्ञान, जीव-धातु-रसायन विज्ञान आदि विषयों पर चर्चा और वास्तुशास्त्र से संबंधित वास्तुविद्याध्याय, पर्यावरण संबंधित विषय वृक्षायुर्वेद, सस्यलक्षणाध्याय,भूगर्भजल ज्ञान हेतु दकार्गलाध्याय का समावेश किया गया है। शास्त्रीद्वितीयवर्ष पुराण इतिहास के पंचम पत्र के पाठ्यक्रम में वाल्मीकि रामायण और महाभारत शामिल हैं, जहाँ रामायण में अयोध्याकांड और महाभारत में वनपर्व पाठ्यपुस्तक के रूप में पर्यावरण विषय शामिल हैं। शास्त्री स्तरीय फलिज्योतिष और सिद्धांतज्योतिष में निर्धारित सूर्यसिद्धांत और सिद्धान्तशिरोमणि में ब्रह्मांड के भौगोलिक स्वरूप का वर्णन पाठ्यांश के रूप में

निहित है। फलिज्योतिष में आचार्य प्रथम वर्ष के द्वितीय प्रश्नपत्र में वास्तुशास्त्र के ग्रंथ बृहदवस्तुमाला निर्धारित है जिसमें गृहप्रबंधन की विस्तृत चर्चा प्राप्त होती है। आभ्यन्तर और बाह्य पर्यावरण का परिवेश कैसा हो? ग्राह्य एवं त्याज्य वृक्ष कौन-कौन से हैं? किस प्रकार के वृक्ष को कैसे और कहाँ व्यवस्थित किया जाय इन विषयों के विचार से पर्यावरण जागरूकता विषय हर जगह पाठ्यक्रम में अंतर्निहित हैं।

- शास्त्री पाठ्यक्रम में स्थिरता विषय जैसे वेद, दर्शन, पुराण, धर्मशास्त्र और नीतिशास्त्र पाठ्यक्रम में विषय हैं । वेद, धर्मशास्त्र,पौरोहित्य,दर्शन, साहित्यादि विषयों के पाठ्यांशों का मानव व्यवहार के साथ संबध हैं। भारतीयविद्या और संस्कृति के पाठ्यक्रम में श्रीमद्भागवत व श्रीमद्भगवतगीता निर्धारित हैं जिनमें समदुखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ इत्यादि प्रेरकांश मानव व्यवहार में धैर्य की अवधारणा को पुष्ट करते हुए स्थैर्यप्रदानपूर्वक मानव जीवन में धैर्य की भावना, स्थितप्रज्ञता, चतुर्वर्णसम्भाव और सभी के प्रति समान दृष्टिकोण को व्यक्त करती है। धर्मशास्त्र में आचार्य प्रथम वर्ष के प्रथम पत्र के व्यवहारमयूख में स्थिरता का वैशिष्ट्यप्रतिपादित है। योग विषय पर आधारित आचार्य पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष के तृतीय प्रश्न पत्र में योगसूत्र को भाष्य सहित पूर्णपाठ्यांश में समाहित किया गया है और जिसमें यम, नियम,आसन, प्रणायाम, प्रत्याहार,धारणा,ध्यान,समाधि के प्रयोग से मानव जीवन और व्यवहार स्थिरता के भाव को पुष्ट किया गया है। इसी प्रकार नीतिशास्त्र से संबंधित स्मृति ग्रंथ के पाठ्यांश मानवव्यवहार में स्थिरता का अवबोधन प्रदान करता है। संस्कृत साहित्य के पाठ्यांश में त्याज्यं न धैर्यं विधुरेपि काले इत्यादि वचनों के माध्यम से व्यवहार में नैतिकता व स्थिरता को पुष्ट करते हैं। शास्त्री प्रथम वर्ष के पंचमपत्र में वेदान्त विषय पर ईश, केन, कठ आदि उपनिषदों का सावेश है, जिनका मुख्य उद्देश्य धैर्य के गुणों को प्राप्त करके मनुष्य के चरित्र में सुधार करना है। धर्मशास्त्र में आचार्य पाठ्यक्रम में निर्धारित याज्ञवल्क्यस्मृति सामाजिक व्यवहार सिखाती है, पुराणों में, श्रीमद्भगवदगीता के चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः आदि वचन समता की भावना व भारतीयविद्यासंस्कृति पाठ्यक्रम में निर्धारित वेदचयनम् विश्वेदेवसूक्त,पुरुषसूक्त व शिवसंकल्प सूक्त के माध्यम से सामाजिक ज्ञान की भावना को दृढ करता है ।

- संस्था में नीतिदर्शन विषय का एक स्वतंत्र पाठ्यक्रम भी है। भारतीय ज्ञान परंपरा में शास्त्रीय पाठ्यक्रम में सर्वत्र मानवीय मूल्यों का समावेश किया गया है। सभी शास्त्रीय विषयों का मुख्य लक्ष्य मानवीयमूल्यों का परिवर्द्धन एवं परिष्करण ही है। मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव तथा वसुधैव कुटुम्बकम्, सहनाववतु सह नौ भुनक्तु, भद्रकर्णेभिः श्रृणुयामदेवाः आदि विषय वैदिक पाठ्यक्रम में समाहित हैं। धर्मशास्त्र के पाठ्यक्रम मनु स्मृति में स्त्री-पुरुष के बीच कर्तव्याकर्तव्यविवेक प्रतिपादित है। पुराण विषयक पाठ्यक्रम में परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् इत्यादि अंश परोपकार के विषय में अवबोधन प्रदान करते हैं । आचार्य कक्षा के साहित्य विषय के काव्य शाखा वर्ग में कादम्बरी को निहित किया गया है, जिसमें यौवनकाल के कर्त्तव्याकर्तव्य के विषय पतिपादित किए गए हैं। शाकुन्तलं में प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः शास्त्री पाठ्यक्रम में प्राचीन राजनीतिविज्ञान और अर्थशास्त्र पर एक स्वतंत्र स्नातक और स्नातकोत्तर उपाधि कार्यक्रम है, जिसमें कौटिलीय अर्थशास्त्र और कामन्दकीयनीतिसार जैसे मानवीय मूल्यों पर पाठ्यक्रम शामिल हैं। पुराण और इतिहास के पाठ्यक्रम में द्वितीय वर्ष के पंचम पत्र में वाल्मीकि

रामायण और महाभारत, धर्मशास्त्र की आचार्य कक्षा में मनुस्मृति द्वारा प्रतिपादित धर्मलक्षण में सभी मानवीय मूल्यों का परिगणन हुआ है । तुलनात्मक धर्म दर्शन के पाठ्यक्रम में पूर्वी और पश्चिमी धर्मों का समन्वय करते हुए मानवीय मूल्यों की नैतिकता पर बल दिया गया है।

- वृत्ति नीति विषय में क्या करना चाहिए? क्या नहीं करना चाहिए? कैसे किया जाना चाहिए? कार्य से कैसे जुड़े रहें ? विषम परिस्थितियों में स्वभाव को स्थिर कैसे रख जाय?इस प्रकार वृत्तिनीति के विषय सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में अंतर्निहित हैं। शास्त्री स्तर पर वेद दर्शन आदि पाठ्यक्रमों में तेन त्यक्तेन भुंजीथाः, मा गृधः कस्यस्विद्धनम, को समायोजित किया गया है। उपनिषदों में कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतूसमाः..... न कर्म लिप्यते नरः इत्यादि वचन तथा पुराण इतिहास पाठ्यक्रम में शास्त्री द्वितीय वर्ष के पंचम पत्र में वाल्मीकि रामायण और महाभारत के अंश समाहित हैं जहाँ आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेदिति इत्यादि के माध्यम से वृत्ति व्यवहार निर्दिष्ट है। नीतिशास्त्र के पाठ्यांश में परद्रव्येषु लोष्ठवदिति व्यवहार भारतीय विद्यासंस्कृति के पाठ्यांश श्रीमद-भगवद्गीता मानव जीवन में वृत्तिनीति विषय पर हतो वा प्राप्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् और स्वस्वकर्मण्यभिरताः संसिद्धिं लभते नरः वाक्यांशों के मानव सवभाव को उन्नत बनाते हैं । व्यवहारमयूख में वृत्तिनीति की भी विविध विशेषताएँ प्रस्तुत की गई हैं।

इस प्रकार यह संस्थान अपने पाठ्यक्रम में स्त्रीपुरुष, पर्यावरणीय स्थिरता, मानवीय मूल्य, नैतिक दृष्टिकोण, पारंपरिक शास्त्र अधिग्रहण प्रणालियों सहित समकालीन समस्याओं की सर्वव्यापक पक्षों को समाहित करता है, जो संस्कृत साहित्य और शास्त्र परंपरा में परिलक्षित होती हैं।

1.3.1 $Q_l M$ संस्था, संस्कृतसाहित्ये शास्त्रपरम्परायां च प्रतिफलितान् स्त्रीपुरुष-पर्यावरण-स्थिरता-मानवीयमूल्य-वृत्तिनीति-पारम्परिकशास्त्राधिगम-प्रणालीसहितसमसामयिक समस्याविषयकान् सर्वत्रानुस्यूतांशान् पाठ्यचर्यायां समन्वयति।

विश्वविद्यालये शास्त्रीयपाठ्यक्रमेषु विविधस्थलेषु स्त्रीपुरूष-स्थिरता-मानवीयमूल्य-वृत्तिनीतिविषयकाः अंशाः निहितास्सन्ति । संस्कृतशास्त्रीयग्रन्थेषु च अन्तर्विषयिणीं पद्धतिमनुसृत्य आधुनिकविषयाणां समावेशः विद्यते । यथा विकल्पीयविषयेषु बहवः एतत्सम्पृक्ताः विषयाः छात्रेभ्यः प्रदत्ताः सन्ति । किंच पाराम्परिकपाठ्यक्रमेपि सर्वविधानां पक्षाणां निवेशः भवति ।

- पाठ्यचर्यायां बहुषु स्थलेषु स्त्रीपुरूषसंतुलनविषयकाः पक्षाः निर्धारितास्सन्ति । यथा ऋग्वेदविषयकपाठ्यक्रमे शास्त्रिप्रथमवर्षे चतुर्थप्रश्नपत्रे ऋग्वेदसंहितायाः निर्धारिते पाठ्यांशे देवीसूक्तं विद्यते यत्र स्त्रीशक्तेः दिव्यं

स्वरूपं वर्णितमस्ति । तथैव पुराणेतिहासविषयकपाठ्यक्रमे शास्त्रिप्रथमवर्षे पंचमप्रश्नपत्रे दुर्गासप्तशती निर्धारितास्ति । तत्रापि देव्याः व्यंजकत्वेन स्त्रीमाहात्म्यं विनिर्दिष्टमस्ति । ऋग्वेदसंहितायाः निर्धारिते पाठ्यांशे यमयमीसंवादः, अभिज्ञानशाकुन्तले स्त्रियाः पुरूषस्य च कृते व्यवहारनियमाः प्रतिपादितास्सन्ति । शुक्लयजुर्वेदस्य पाठ्यक्रमे पुरूषसूक्तम्, धर्मशास्त्रपाठ्यक्रमे आचार्यद्वितीयवर्षे प्रथमपत्रे पुरुषार्थचिन्तामणिग्रन्थे मनुस्मृतौ च स्त्रीपुरूषयोः कर्तव्याकर्तव्यविवेकः प्रतिपादितोस्ति । एवमेव पुराणेतिहासपाठ्यक्रमे शास्त्रिद्वितीयवर्षे पंचमपत्रे वाल्मीकिरामायणं महाभारतं च निर्धारितं विद्यते यत्र स्त्रीपुरूषसम्बद्धाः विषयाः पाठ्यक्रमे अभिनिविष्टास्सन्ति । सांख्यदर्शने च प्रकृतिपुरुषयोः समन्वयेन स्त्रीपुरुषसम्बन्धः विज्ञाप्यत एव ।

- पाठ्यक्रमे सर्वत्र पर्यावरणचेतनाविषयकाः पक्षाः संपृक्तास्सन्ति । यथा शास्त्रिप्रथमवर्षे अनिवार्यतया प्रथमपत्रे अभिज्ञाानशाकुंतलम् निहितमस्ति तत्र मंगलपद्यमारभ्य भरतवाक्यपर्यन्तं मानवप्रकृत्योः सम्बन्धः वैज्ञानिकतया प्रतिपादितः विद्यते । ज्योतिषविषयकपाठ्यक्रमे फलितज्योतिषे तु आचार्यप्रथमवर्षे तृतीयचतुर्थपत्रे बृहत्संहिता विद्यते यत्र भूगर्भ-जीव-धातु-रसायनादिविषयाणां चर्चा वृक्षायुर्वेद-वास्तुशास्त्रसम्बद्धे कृषिपाराशरग्रन्थे पर्यावरणविषयाः स्पष्टतया प्रतिपादितास्सन्ति । एवमेव पुराणेतिहासपाठ्यक्रमे शास्त्रिद्वितीयवर्षे पंचमपत्रे वाल्मीकिरामायणं महाभारतं च नियतं वर्तते यत्र रामायणे अयोध्याकाण्डे महाभारते वनपर्वणि पर्यावरणविषयाः पाठ्यांशरूपेण समाहितास्सन्ति । शास्त्रिस्तरे फलिज्यौतिषे सिद्धान्तज्यौतिषे च निर्धारिते सूर्यसिद्धान्ते सिद्धान्तशिरोमणौ च ब्रह्माण्डस्य भौगोलिकं स्वरूपं पाठ्यांशे निहितमस्ति। न केवलं स्त्रीपुरुषयोः अपितु महाभारते समागतानां बृहन्नलाशिखण्डीप्रभृतिचरित्राणां पाठ्यक्रमे निवेशेन तृतीयपक्षस्यापि अवबोधने पाठ्यक्रमः समर्थः विद्यते । फलिज्योतिषे आचार्यप्रथमवर्षे द्वितीयपत्रे वास्तुशास्त्रस्य ग्रन्थः बृहद्वास्तुमाला निर्धारितः विद्यते यत्र आवासीयप्रबन्धने कुत्र कस्यां दिशि गृहे आभ्यन्तरं बाह्यं च पर्यावरणं कीदृशं भवेत् ? बृहत्संहिताग्रंथे च केषां वृक्षाणां कथं विन्यासः भवतीति प्रबोधनं छात्रेभ्यो विधीयते । इत्थं सर्वत्र पर्यावरणचेतनाविषयाः पाठ्यक्रमे निहितास्सन्तिः।
- शास्त्रीयपाठ्यक्रमेषु स्थिरताविषये वेदे- दर्शने- पुराणे -धर्मशास्त्रे नीतिशास्त्रीयपाठ्यक्रमे च विषयाः वर्तन्ते । वेद-धर्मशास्त्र-पौरोहित्य-दर्शन-साहित्यादिविषयेषु पाठ्यांशाः मानवव्यवहारस्थैर्यसम्बद्धा एव । भारतीयविद्यासंस्कृतिपाठ्यक्रमे श्रीमद्भगवद्गीता मानवजीवने स्थैर्यस्य चर्चां स्थितप्रज्ञरूपेण विदधाति किं च चतुर्वणसमभावं सर्वेषां समदर्शनं च व्यंजयति । धर्मशास्त्रे आचार्यप्रथमवर्षस्य प्रथमपत्रे व्यवहारमयूखे

स्थिरतायाः वैशिष्ट्यं प्रतिपादितं विद्यते । योगविषयकपाठ्यक्रमे आचार्यप्रथमवर्षे तृतीयप्रश्नपत्रे योगसूत्रं सभाष्यं पाठ्यांशे सम्पृक्तमस्ति । तत्र च यमनियमादीनां विनियोगेन मानवजीवने व्यवहारे च कथं स्थैर्यं साधनीयमिति कूर्मनाड्यां स्थैर्यमिति ससूत्रं विषयाः निहितास्सन्ति । एवमेव नीतिसम्बद्धाः स्मृतिग्रन्थाः मनुस्मृति-आचारशुद्धिप्रभृतयः पाठ्यंशाः मानव्यवहारे स्थिरतां पोषयन्ति। संस्कृतसाहित्यपाठ्यक्रमे किरातार्जुनीय- शिशुपालवध-अभिज्ञानशाकुन्तल-भर्तृहरिशतकानां निवेशः मानवव्यवहारनीतौ स्थिरतां विकासयति । तत्र वेदान्तविषये शास्त्रिप्रथमवर्षे पंचमपत्रे ईशकेनकठादि-उपनिषदः निर्धारिताः येषां मुख्यमुद्देश्यं मानवस्य स्थैर्यगुणसम्पादनपूर्वकं चारित्रिकमुत्थानमेव । धर्मशास्त्रे आचार्यपाठ्यक्रमे याज्ञवल्क्यस्मृतिः आचार्यपाठ्यक्रमे सामाजिकव्यवहारं बोधयति तथैव पुराणे श्रीमद्भगवद्गीता च वर्णव्यवस्थाविषये, दुर्गासप्तशती भारतीयविद्यासंसकृतिविषये वेदचयनम् इति पाठ्यांशे विश्वेदेव-पुरूष-शिवसंकल्पसूक्तानां माध्यमेन सामाजिकं प्रबोधनं कृतं विद्यते ।

- भारतीयज्ञानपरम्परायां शास्त्रीयपाठ्यक्रमेषु सर्वत्र मानवीयमूल्यानां समावेशः विद्यते । सर्वेषां शास्त्रीयविषयाणां मुख्यं लक्ष्यं मानवीयमूल्यानां परिषोणमेव । तत्र मातृदेवो भव,पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव, वसुधैवकुटुम्बकम् प्रभृतयः विषयाः वैदिकपाठ्यक्रमे सन्निविष्टास्सन्ति । नीतिदर्शनम् इतिविषयकः स्वतन्त्रकार्यक्रमोपि संस्थया प्रचाल्यते । धर्मशास्त्रपाठ्यक्रमे मनुस्मृतौ च स्त्रीपुरूषयोः कर्तव्याकर्तव्यविवेकः प्रतिपादितोस्ति । पुराणविषयकपाठ्यक्रमे तु परोपकारविषये यथा वर्णितं तथैव मूलपाठ्यांशरूपेण शास्त्रिस्तरे आर्चायस्तरे च पुराणविषये सन्निहितो विद्यते । आचार्यकक्षायां साहित्यविषये काव्यशाखायां कादम्बरी निर्धारिता यत्र युवनीतिविषयाणामुल्लेखः कृतोस्ति । एवमेव शास्त्रीयपाठ्यक्रमेषु प्राचीनराजशास्त्रार्थशास्त्रविषयकः स्वतन्त्रतया स्नातक-स्नातकोत्तरोपाधिकार्यक्रमः विद्यते यत्र कौटिलीयार्थशास्त्रम्, कामन्दकीयनीतिसारप्रभृतयः मानवीयमूल्यसम्बद्धाः पाठ्यंशाः सम्बद्धास्सन्ति । पुराणेतिहासपाठ्यक्रमे शास्त्रिद्वितीयवर्षे पंचमपत्रे वाल्मीकिरामायणं महाभारतं च निर्धारितं विद्यते यत्र च स्वकर्तव्यविषयेदयानीतिविषयाः पाठ्यक्रमे अभिनिविष्टास्सन्ति । धर्मशास्त्रे आचार्यकक्षायां मनुस्मृतौ धर्मलक्षणे सर्वेषां मानवीयमूल्यानामेव परिगणना कृतास्ति । तुलनात्मकधर्मदर्शने सर्वेषां प्राच्यपाश्चात्यधर्मावलम्बिनां अध्ययनं मानवीयमूल्यनीतिं च विकासयति ।
    - वत्तिनीतिविषये तु किं कर्तव्यम्? किं वा न कर्तव्यम् ? कथं कर्तव्यम् ? कर्मणि आसक्तता कीदृग् भवेदिति वृत्तिनीतिविषयाः सर्वत्र पाठ्यक्रमे निहितास्सन्ति । तच्च शास्त्रिस्तरे वेददर्शनादिपाठ्यक्रमेषु तेन

त्यक्तेन भुंजीथाः, मा गृधः कस्यस्विद्धनम्, एतादृशाःवत्तिनीतिविषयकाः पक्षाः समायोजितास्सन्तिा। एवमेव पुराणेतिहासपाठ्यक्रमे शास्त्रिद्वितीयवर्षे पंचमपत्रे वाल्मीकिरामायणं महाभारतं च निर्धारितं विद्यते यत्र आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेदिति वृत्तिव्यवहारः निर्दिष्टोस्ति। नीतिशास्त्रे च पाठ्यांशे परद्रव्येषुलोष्ठवदिति व्यवहारांशः अपि पाठ्यक्रमे विहितः वर्तते । भारतीयविद्यासंस्कृतिपाठ्यक्रमे श्रीमद्भगवद्गीता मानवजीवने वृत्तिनीतिविषये हतो वा प्राप्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् तथा च स्वस्वकर्मण्यभिरताः संसिद्धिं लभते नरः इति वाक्यांशैः विदधाति चतुर्वणसमभावं सर्वेषां समदर्शनं च व्यंजयति । धर्मशास्त्रे आचार्यप्रथमवर्षस्य प्रथमपत्रे व्यवहारमयूखे वृत्तिनीतिविषये अन्यदपि वैशिष्ट्यं प्रतिपादितं विद्यते ।

इत्थं संस्था, संस्कृतसाहित्ये शास्त्रपरम्परायां च प्रतिफलितान् स्त्रीपुरुष-पर्यावरण-स्थिरता-मानवीयमूल्य-वृत्तिनीति-पारम्परिकशास्त्राधिगम-प्रणालीसहितसमसामयिक समस्याविषयकान् सर्वत्रानुस्यूतांशान् पाठ्यचर्यायां समन्वयति।

पाठ्यक्रम में विविध विषयक अवबोधन

स्त्री-पुरुष पर्यावरण-स्थिरता-मानवीयूल्य-वृत्तिनीति

- स्त्री पुरुष
- पर्यावरण
- स्थिरता
- मनवीयमूल्य
- वृत्तिनीति

सहायकग्रन्थौ:

१. मन्त्रार्थदीपिका शत्रुघ्नमिश्रकृता

२. याज्ञिकसुधा — १५

(ग) धर्मस्वरूपज्ञानम्

सहायकग्रन्थः

१. धर्म का स्वरूप। प्राप्तिस्थान–श्रीकिशो. .विश्वनाथ, नेपालीखपड़ा, वाराणसी।

२६. पुराणेतिहासः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्	१००
(क) श्रीमद्भागवतस्य प्रथमः स्कन्धः द्वितीयस्कन्धश्च	८०
(ख) पद्मपुराणान्तर्गतं भागवतमाहात्म्यम्	२०
पञ्चमं प्रश्नपत्रम्	१००
(क) दुर्गासप्तशती (शान्तनवीटीका)	४०
(ख) ब्रह्मवैवर्त्तपुराणान्तर्गतं काशीरहस्यम्	६०
षष्ठं प्रश्नपत्रम्	१००

प्राचीनभारतस्य राजनीतिकेतिहासः

प्रारम्भतः कुषाणकालपर्यन्तम्

अथवा

श्रीमद्भागवतस्य तृतीयस्कन्धः

सहायक-ग्रन्थाः

१. प्राचीन भारत का इतिहास–डॉ. एस. एन. दूबे, आगरा

२. प्राचीन भारत का इतिहास–डॉ. विमलचन्द्र पाण्डेय

३. प्राचीन भारत–डॉ. राजबली पाण्डेय

४. प्राचीन भारत–डॉ. राधामुकुन्द मुखर्जी

५. श्रीमद्भागवतम् : श्रीधरी टीका

६. दुर्गासप्तशती : सम्पादकः–प्रो. गिरिजेशकुमारदीक्षितः

१२. साङ्ख्ययोगः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्	१००
(क) साङ्ख्यसारः (पूर्वभागः) विज्ञानभिक्षुकृतः	५०
(ख) साङ्ख्यतत्त्वप्रदीपः–वैकुण्ठशिष्ययतिकविराजयतिकृतः	५०
अथवा	
(ग) साङ्ख्यपरिभाषा	
पञ्चमं प्रश्नपत्रम्	१००
(क) सांख्यतत्त्वविवेचनम्–षिमानन्ददीक्षितकृतः	२५
(ख) तत्त्वसमाससूत्रवृत्तिः	२५
(ग) षट्चक्रनिरूपणम्	५०
षष्ठं प्रश्नपत्रम्	१००
(क) ईश-केन-कठ-तैत्तिरीय-ऐतरेय-श्वेताश्वरतर-उपनिषदः	५०
(ख) उपदेशसाहस्री (गद्यांशमात्रम्)	५०

१३. पूर्वमीमांसा

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्	१००
जैमिनीयन्यायमालायाः सविस्तरायाः १-२ अध्यायौ	

मानमेयोदयः नारायणभट्टकृतः

१४. वेदान्तः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् **१००**

वेदान्तपरिभाषा

सहायक ग्रन्थ प्रो. पारसनाथ द्विवेदी द्वारा सम्पादित सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् **१००**

ईश-केन-कठ-मुण्डक-माण्डूक्य-तैत्तिरीय-ऐतरेयोपनिषदः स्व-स्वसम्प्रदायानुसारिव्याख्यासहिताः (विशेषः–छात्रैः प्रश्नोत्तरकाले स्वस्वसम्प्रदायटीकायाः स्वाभ्यस्तटीकाया वा निर्देशो विधेयः)

षष्ठं प्रश्नपत्रम् **१००**

अष्टमं प्रश्नपत्रम् १००

(क) निदानकथा (जातकट्ठकथा) दूरे निदानम् ५०

(ख) धम्मपदं ५०

अत्तवग्गो, बुद्धवग्गो, बालवग्गो, पण्डितवग्गो, पुप्फवग्गो, मग्गवग्गो, चित्तवग्गो, नागवग्गो, तण्हावग्गो, भिक्खुवग्गो, ब्राह्मणवग्गो।

१०. प्राकृतम्

सप्तमं प्रश्नपत्रम् १००

(क) प्राकृतव्याकरणम्

(मागधी, अर्धमागधी-शौरसेनी-महाराष्ट्रीप्राकृतानां व्याकरणम्) निम्नांकितेषु कमप्येकग्रन्थानुसारम् हेमचन्द्रकृतम् प्राकृतव्याकरणम् (हेमशब्दानुशासनान्तर्गतम्), वररुचिकृतः प्राकृतप्रकाशः, त्रिविक्रमकृतम् प्राकृतव्याकरणम्।

(ख) रचनानुवादः

सहायकग्रन्थ

१. प्राकृत प्रबोध नेमिचन्द्र शास्त्री। प्रकाशक-चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी।

२. अभिनव प्राकृत व्याकरण–डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री। प्रकाशक-तारा पब्लिकेशन्स, वाराणसी।

सहायकग्रन्थौ

१. चरणव्यूहः, समुपलब्धवेदशाखापरिचयसहितः

२. कातीयश्रौतसूत्रस्य भूमिका–म.म. श्रीविद्याधरशर्मकृता

२६. पुराणेतिहासः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् १००

श्रीमद्भागवतस्य चतुर्थस्कन्धः

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् १००

(क) वाल्मीकिरामायणे बालकाण्डे आदितः पञ्चाशत् सर्गाः ६०

(ख) महाभारतम् अनुशासनपर्वणि आदितः पञ्चविंशत्यध्यायाः ४०

षष्ठं प्रश्नपत्रम् १००

(क) विष्णुपुराणे पञ्चमोंऽशः ३०

(ख) देवीभागवते प्रथमस्कन्धः ३०

(ग) प्राचीनभारतस्येतिहासः गुप्तकालादारभ्य हर्षकालं यावत् ४०

सहायकग्रन्थौः

१. मन्त्रार्थदीपिका शत्रुघ्नमिश्रकृता

२. याज्ञिकसुधा 15

(ग) धर्मस्वरूपज्ञानम्

सहायकग्रन्थः

१. धर्म का स्वरूप। प्राप्तिस्थान–श्रीकिशो..विश्वनाथ, नेपालीखपड़ा, वाराणसी।

२६. पुराणेतिहासः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् १००

(क) श्रीमद्भागवतस्य प्रथमः स्कन्धः द्वितीयस्कन्धश्च ८०

(ख) पद्मपुराणान्तर्गतं भागवतमाहात्म्यम् २०

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् १००

(क) दुर्गासप्तशती (शान्तनवीटीका) ४०

(ख) ब्रह्मवैवर्त्तपुराणान्तर्गतं काशीरहस्यम् ६०

षष्ठं प्रश्नपत्रम् १००

प्राचीनभारतस्य राजनीतिकेतिहासः

प्रारम्भतः कुषाणकालपर्यन्तम्

अथवा

श्रीमद्भागवतस्य तृतीयस्कन्धः

सहायक-ग्रन्थाः

१. प्राचीन भारत का इतिहास–डॉ. एस. एन. दूबे, आगरा
२. प्राचीन भारत का इतिहास–डॉ. विमलचन्द्र पाण्डेय
३. प्राचीन भारत–डॉ. राजबली पाण्डेय
४. प्राचीन भारत–डॉ. राधामुकुन्द मुखर्जी
५. श्रीमद्भागवतम् : श्रीधरी टीका
६. दुर्गासप्तशती : सम्पादकः–प्रो. गिरिजेशकुमारदीक्षितः

मूर्तिप्रमाणम्, प्रतिमास्वरूपम्, ध्यानानुसारं देवमूर्तयः, वाहनानि, आयुधानि, वस्त्रालंकरणादिकञ्च।

अभिपर्यालोचनीयग्रन्थाः–१. समरांगणसूत्रधारः, २. मनसोल्लासः, ३. हरिभक्तिविलासः, ४. हिन्दूसर्वस्वम्, ५. शिल्पम्।

पाठ्यक्रम में स्त्री पुरूष विषयक अवबोधन

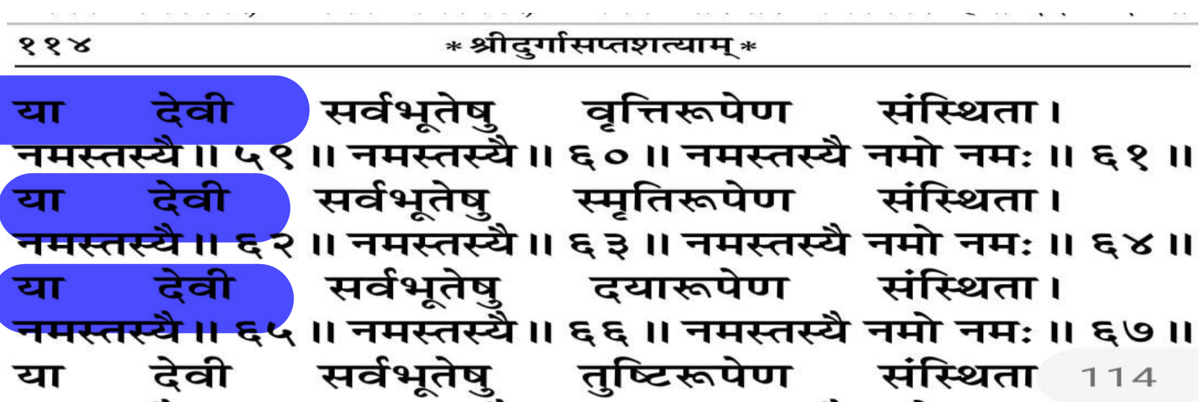

या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ॥ ५९ ॥ नमस्तस्यै ॥ ६० ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६१ ॥
या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ॥ ६२ ॥ नमस्तस्यै ॥ ६३ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६४ ॥
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै ॥ ६५ ॥ नमस्तस्यै ॥ ६६ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६७ ॥
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता 114

देवि सुक्तम्

ॐ अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः ।
अहं मित्रावरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा ॥१॥

अहं सोममाहनसं बिभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम् ।
अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सप्राव्ये ये यजमानाय सुन्वते ॥२॥

अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् ।
तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम् ॥३॥

मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम् ।
अमन्तवोमान्त उपक्षियन्ति श्रुधि श्रुतं श्रद्धिवं ते वदामि ॥४॥

अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः ।

पाठ्यक्रम में उभयलिंगी समाज विषयक अवबोधन

सहायकग्रन्थौ

१. चरणव्यूहः, समुपलब्धवेदशाखापरिचयसहितः

२. कातीयश्रौतसूत्रस्य भूमिका-म.म. श्रीविद्याधरशर्मकृता

२६. पुराणेतिहासः

चतुर्थ प्रश्नपत्रम्	१००
श्रीमद्भागवतस्य चतुर्थस्कन्धः	
पञ्चमं प्रश्नपत्रम्	१००
(क) वाल्मीकिरामायणे बालकाण्डे आदितः पञ्चाशत् सर्गाः	६०
(ख) महाभारतम् अनुशासनपर्वणि आदितः पञ्चविंशत्यध्यायाः	४०
षष्ठं प्रश्नपत्रम्	१००
(क) विष्णुपुराणे पञ्चमोंऽशः	३०
(ख) देवीभागवते प्रथमस्कन्धः	३०
(ग) प्राचीनभारतस्येतिहासः गुप्तकालादारभ्य हर्षकालं यावत्	४०

एते रथाश्चातिरथाश्च तुभ्यं
यथाप्रधानं नृप कीर्तिता मया ।
तथापरे येऽर्धरथाश्च केचित्
तथैव तेषामपि कौरवेन्द्र ॥ १४ ॥

राजन् ! इस प्रकार मैंने तुम्हारे इन मुख्य-मुख्य रथियों और अतिरथियोंका वर्णन किया है । इनके सिवा, जो कोई अर्धरथी हैं, उनका भी परिचय दिया है । कौरवेन्द्र ! इसी प्रकार पाण्डवपक्षके भी रथी आदिका दिग्दर्शन कराया गया है ॥

अर्जुनं वासुदेवं च ये चान्ये तत्र पार्थिवाः ।
सर्वांस्तान् वारयिष्यामि यावद् द्रक्ष्यामि भारत ॥ १५ ॥

भारत ! अर्जुन, श्रीकृष्ण तथा अन्य जो-जो भूपाल हैं, मैं उनमेंसे जितनोंको देखूँगा, उन सबको आगे बढ़नेसे रोक दूँगा ॥

पाञ्चाल्यं तु महाबाहो नाहं हन्यां शिखण्डिनम् ।
उद्यतेषुमथो दृष्ट्वा प्रतियुध्यन्तमाहवे ॥ १६ ॥

परंतु महाबाहो ! पाञ्चालराजकुमार शिखण्डीको धनुषपर बाण चढ़ाये युद्धमें अपना सामना करते देखकर भी मैं नहीं मारूँगा ॥ १६ ॥

लोकस्तं वेद यदहं पितुः प्रियचिकीर्षया ।
प्राप्तं राज्यं परित्यज्य ब्रह्मचर्यव्रते स्थितः ॥ १७ ॥

सारा जगत् यह जानता है कि मैं मिले हुए राज्यको पिताका प्रिय करनेकी इच्छासे ठुकराकर ब्रह्मचर्यके पालनमें दृढ़तापूर्वक लग गया ॥ १७ ॥

चित्राङ्गदं कौरवाणामाधिपत्येऽभ्यषेचयम् ।
विचित्रवीर्यं च शिशुं यौवराज्येऽभ्यषेचयम् ॥ १८ ॥

माता सत्यवतीके ज्येष्ठ पुत्र चित्राङ्गदको कौरवोंके राज्यपर और बालक विचित्रवीर्यको युवराजके पदपर अभिषिक्त कर दिया था ॥ १८ ॥

देवव्रतत्वं विज्ञाप्य पृथिवीं सर्वराजसु ।
नैव हन्यां स्त्रियं जातु न स्त्रीपूर्वं कदाचन ॥ १९ ॥

सम्पूर्ण भूमण्डलमें समस्त राजाओंके यहाँ अपने देवव्रतस्वरूपकी ख्याति कराकर मैं कभी भी किसी स्त्रीको अथवा जो पहले स्त्री रहा हो, उस पुरुषको भी नहीं मार सकता ॥ १९ ॥

स हि स्त्रीपूर्वको राजन् शिखण्डी यदि ते श्रुतः ।
कन्या भूत्वा पुमान् जातो न योत्स्ये तेन भारत ॥ २० ॥

राजन् ! शायद तुम्हारे सुननेमें आया होगा, शिखण्डी पहले 'स्त्रीरूप' में ही उत्पन्न हुआ था; भारत ! पहले कन्या होकर वह फिर पुरुष हो गया था; इसीलिये मैं उससे युद्ध नहीं करूँगा ॥ २० ॥

सर्वांस्त्वन्यान् हनिष्यामि पार्थिवान् भरतर्षभ ।
यान् समेष्यामि समरे न तु कुन्तीसुतान् नृप ॥ २१ ॥

भरतश्रेष्ठ ! मैं अन्य सब राजाओंको, जिन्हें युद्धमें पाऊँगा, मारूँगा; परंतु कुन्तीके पुत्रोंका वध कदापि नहीं करूँगा ॥ २१ ॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वणि रथातिरथसंख्यानपर्वणि द्विसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १७२ ॥

इस प्रकार श्रीमहाभारत उद्योगपर्वके अन्तर्गत रथातिरथसंख्यानपर्वमें एक सौ बहत्तरवाँ अध्याय पूरा हुआ ॥ १७२ ॥

(अम्बोपाख्यानपर्व)

त्रिसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः

अम्बोपाख्यानका आरम्भ—भीष्मजीके द्वारा काशिराजकी कन्याओंका अपहरण

दुर्योधन उवाच

किमर्थं भरतश्रेष्ठ नैव हन्याः शिखण्डिनम् ।
उद्यतेषुमथो दृष्ट्वा समरेष्वाततायिनम् ॥ १ ॥

दुर्योधनने पूछा—भरतश्रेष्ठ ! जब शिखण्डी धनुष-बाण उठाये समरमें आततायीकी भाँति आपको मारने आयेगा, उस समय उसे इस रूपमें देखकर भी आप क्यों नहीं मारेंगे ?

पूर्वमुक्त्वा महाबाहो पञ्चालान् सह सोमकैः ।
हनिष्यामीति गाङ्गेय तन्मे ब्रूहि पितामह ॥ २ ॥

महाबाहु गङ्गानन्दन ! पितामह ! आप पहले तो यह कह चुके हैं कि 'मैं सोमकोंसहित पञ्चालोंका वध करूँगा' (फिर आप शिखण्डीको छोड़ क्यों रहे हैं ?) यह मुझे बताइये ॥

भीष्म उवाच

शृणु दुर्योधन कथां सहैभिर्वसुधाधिपैः ।
यदर्थं युधि सम्प्रेक्ष्य नाहं हन्यां शिखण्डिनम् ॥ ३ ॥

भीष्मजीने कहा—दुर्योधन ! मैं जिस कारणसे समराङ्गणमें प्रहार करते देखकर भी शिखण्डीको नहीं मारूँगा, उसकी कथा कहता हूँ, इन भूमिपालोंके साथ सुनो ॥ ३ ॥

महाराजो मम पिता शान्तनुर्लोकविश्रुतः ।
दिष्टान्तमाप धर्मात्मा समये भरतर्षभ ॥ ४ ॥
ततोऽहं भरतश्रेष्ठ प्रतिज्ञां परिपालयन् ।
चित्राङ्गदं भ्रातरं वै महाराज्येऽभ्यषेचयम् ॥ ५ ॥

भरतश्रेष्ठ ! मेरे धर्मात्मा पिता लोकविख्यात महाराज शान्तनुका जब निधन हो गया, उस समय अपनी प्रतिज्ञाका पालन करते हुए मैंने भाई चित्राङ्गदको इस महान् राज्यपर अभिषिक्त कर दिया ॥ ४-५ ॥

तस्मिंश्च निधनं प्राप्ते सत्यवत्या मते स्थितः ।
विचित्रवीर्यं राजानमभ्यषिञ्चं यथाविधि ॥ ६ ॥

तदनन्तर जब चित्राङ्गदकी भी मृत्यु हो गयी, तब माता सत्यवतीकी सम्मतिसे मैंने विधिपूर्वक विचित्रवीर्यका राजाके पदपर अभिषेक किया ॥ ६ ॥

हँसते हुए जब उससे अपने पास आनेका कारण पूछा, तब वह राजपुत्री नरश्रेष्ठ अर्जुनके समीप जा अपना प्रेम प्रकट करती हुई सखियोंके बीचमें इस प्रकार बोली—॥ ६-७ ॥

गावो राष्ट्रस्य कुरुभिः काल्यन्ते नो बृहन्नले ।
ता विजेतुं मम भ्राता प्रयास्यति धनुर्धरः ॥ ८ ॥

'बृहन्नले ! हमारे राष्ट्रकी गौओंको कौरव हाँककर लिये जाते हैं; अतः उन्हें जीतनेके लिये मेरे भैया धनुष धारण करके जानेवाले हैं ॥ ८ ॥

नाचिरं निहतस्तस्य संग्रामे रथसारथिः ।
तेन नास्ति समः सूतो योऽस्यं सारथ्यमाचरेत् ॥ ९ ॥

'थोड़े ही दिन हुए, उनके रथका सारथि एक युद्धमें मारा गया। इस कारण कोई ऐसा योग्य सूत नहीं है, जो उनके सारथिका काम सँभाल सके ॥ ९ ॥

तस्मै प्रयतमानाय सारथ्यर्थं बृहन्नले ।
आचचक्षे हयज्ञाने सैरन्ध्री कौशलं तव ॥ १० ॥

'बृहन्नले ! वे सारथि ढूँढ़नेका प्रयत्न कर रहे थे, इतनेमें ही सैरन्ध्रीने पहुँचकर यह बताया कि तुम अश्वविद्यामें कुशल हो ॥ १० ॥

अर्जुनस्य किलासीस्त्वं सारथिर्दयितः पुरा ।
त्वयाजयत् सहायेन पृथिवीं पाण्डवर्षभः ॥ ११ ॥

'पहले तुम अर्जुनका प्रिय सारथि रह चुकी हो। तुम्हारी सहायतासे उन पाण्डवशिरोमणिने समूची पृथ्वीपर विजय पायी है ॥ ११ ॥

सा सारथ्यं मम भ्रातुः कुरु साधु बृहन्नले ।
पुरा दूरतरं गावो ह्रियन्ते कुरुभिर्हि नः ॥ १२ ॥

'अतः बृहन्नले ! इसके पहले कि कौरवलोग हमारी गौओंको बहुत दूर लेकर चले जायँ, तुम मेरे भाईके सारथिका कार्य अच्छी तरह कर दो ॥ १२ ॥

अथैतद् वचनं मेऽद्य नियुक्ता न करिष्यसि ।
प्रणयादुच्यमाना त्वं परित्यक्ष्यामि जीवितम् ॥ १३ ॥

'सखी ! मैं बड़े प्रेमसे यह बात कहती हूँ। यदि आज इतना अनुरोध करनेपर भी तुम मेरी बात नहीं मानोगी, तो मैं प्राण त्याग दूँगी' ॥ १३ ॥

एवमुक्तस्तु सुश्रोण्या तया सख्या परंतपः ।
जगाम राजपुत्रस्य सकाशममितौजसः ॥ १४ ॥
तमाव्रजन्तं त्वरितं प्रभिन्नमिव कुञ्जरम् ।
अन्वगच्छद् विशालाक्षी गजं गजवधूरिव ॥ १५ ॥

सुन्दर कटिप्रदेशवाली सखी उत्तराके ऐसा कहनेपर शत्रुओंको संताप देनेवाले अर्जुन अमितपराक्रमी राजकुमार उत्तरके समीप गये। मद टपकानेवाले गजराजकी भाँति शीघ्रतापूर्वक आते हुए अर्जुनके पीछे-पीछे विशाल नेत्रोंवाली उत्तरा भी आयी; ठीक उसी तरह, जैसे हथिनी हाथीके पीछे-पीछे जाती है ॥ १४-१५ ॥

दूरादेव तु तां प्रेक्ष्य राजपुत्रोऽभ्यभाषत ।
त्वया सारथिना पार्थः खाण्डवेऽग्निमतर्पयत् ॥ १६ ॥
पृथिवीमजयत् कृत्स्नां कुन्तीपुत्रो धनंजयः ।
सैरन्ध्री त्वां समाचष्टे सा हि जानाति पाण्डवान् ॥ १७ ॥

राजकुमार उत्तरने बृहन्नलाको दूरसे ही देखकर इस प्रकार कहा—'बृहन्नले ! अर्जुनने तुम्हें सारथि बनाकर खाण्डववनमें अग्निको तृप्त किया था। इतना ही नहीं, कुन्तीपुत्र धनंजयने तुम-जैसे सारथिके सहयोगसे ही समूची पृथ्वीपर विजय पायी है।' तुम्हारे विषयमें यह बात सैरन्ध्री कह रही थी, क्योंकि वह पाण्डवोंको अच्छी तरह जानती है ॥ १६-१७ ॥

संयच्छ मामकानश्वांस्तथैव त्वं बृहन्नले ।
कुरुभिर्योत्स्यमानस्य गोधनानि परीप्सतः ॥ १८ ॥

'बृहन्नले ! तुम अर्जुनकी ही भाँति मेरे घोड़ोंको भी काबूमें रखना, क्योंकि मैं अपना गोधन वापस लानेके लिये कौरवोंके साथ युद्ध करनेवाला हूँ ॥ १८ ॥

अर्जुनस्य किलासीस्त्वं सारथिर्दयितः पुरा ।
त्वयाजयत् सहायेन पृथिवीं पाण्डवर्षभः ॥ १९ ॥

'पहले तुम अर्जुनका प्रिय सारथि रह चुकी हो और तुम्हारी ही सहायतासे उन पाण्डवशिरोमणिने समूची पृथ्वीपर विजय पायी है' ॥ १९ ॥

एवमुक्ता प्रत्युवाच राजपुत्रं बृहन्नला ।
का शक्तिर्मम सारथ्यं कर्तुं संग्राममूर्धनि ॥ २० ॥

एवमुक्तः स सैरन्ध्या भगिनीं प्रत्यभाषत ।
गच्छ त्वमनवद्याङ्गि तामानय बृहन्नलाम् ॥ २३ ॥

सैरन्ध्रीके ऐसा कहनेपर उत्तर अपनी बहिनसे बोला—'निर्दोष अङ्गोंवाली उत्तरे ! जाओ, उस बृहन्नलाको बुला ले आओ' ॥ २३ ॥

सा भ्रात्रा प्रेषिता शीघ्रमगच्छन्नर्तनागृहम् ।
यत्रास्ते स महाबाहुश्छन्नः सत्रेण पाण्डवः ॥ २४ ॥

भाईके भेजनेपर कुमारी उत्तरा शीघ्र नृत्यशालामें गयी, जहाँ पाण्डुनन्दन महाबाहु अर्जुन कपटवेषमें छिपकर रहते थे ॥ २४ ॥

इति श्रीमहाभारते विराटपर्वणि गोहरणपर्वणि उत्तरगोग्रहे बृहन्नलासारथ्यकथने षट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥

इस प्रकार श्रीमहाभारत विराटपर्वके अन्तर्गत गोहरणपर्वमें उत्तर दिशाकी ओरसे गौओंके अपहरणके प्रसंगमें बृहन्नलाका सारथ्यकथनसम्बन्धी छत्तीसवाँ अध्याय पूरा हुआ ॥ ३६ ॥

सप्तत्रिंशोऽध्यायः

बृहन्नलाको सारथि बनाकर राजकुमार उत्तरका रणभूमिकी ओर प्रस्थान

वैशम्पायन उवाच

सा प्राद्रवत् काञ्चनमाल्यधारिणी
ज्येष्ठेन भ्रात्रा प्रहिता यशस्विनी ।
सुदक्षिणा वेदिविलग्नमध्या
सा पद्मपत्राभनिभा शिखण्डिनी ॥ १ ॥
तन्वी शुभाङ्गी मणिचित्रमेखला
मत्स्यस्य राज्ञो दुहिता श्रिया वृता ।
तन्नर्तनागारमरालपक्ष्मा
शतह्रदा मेघमिवान्वपद्यत ॥ २ ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं—जनमेजय ! कुमारी उत्तरा सोनेकी माला और मोरपंखका श्रृङ्गार धारण किये हुए थी। उसकी अङ्गकान्ति कमलदलकी-सी आभावाली लक्ष्मीको भी लज्जित कर रही थी। उसकी कमर यज्ञकी वेदीके समान सूक्ष्म थी। शरीरसे भी वह पतली ही थी। उसके सभी अङ्ग शुभ लक्षणोंसे युक्त थे। उसने कटिप्रदेशमें मणियोंकी बनी हुई विचित्र करधनी पहन रक्खी थी। मत्स्यराजकी वह यशस्विनी कन्या अनुपम शोभासे प्रकाशित हो रही थी। बड़ों-की आज्ञा माननेवाली कुमारी उत्तरा बड़े भाईके भेजनेसे बड़ी उतावलीके साथ नृत्यशालामें गयी; मानो चपला मेघमालामें विलीन हो गयी हो। उसके नेत्रोंकी टेढ़ी-टेढ़ी बरौनियाँ बड़ी भली मालूम होती थीं ॥ १-२ ॥

सा हस्तिहस्तोपमसंहितोरुः
स्वनिन्दिता चारुदती सुमध्यमा ।
आसाद्य तं वै वरमाल्यधारिणी
पार्थं शुभा नागवधूरिव द्विपम् ॥ ३ ॥

उसकी परस्पर सटी हुई जाँघें हाथीकी सूँड़के समान सुशोभित होती थीं, दाँत चमकीले और मनोहर थे। शरीरका मध्यभाग बड़ा सुहावना था। वह अनिन्द्यसुन्दरी सुन्दर हार धारण किये उन कुन्तीनन्दन अर्जुनके पास पहुँचकर गजराजके समीप गयी हुई हथिनीके समान शोभा पा रही थी ॥ ३ ॥

सा रत्नभूता मनसः प्रियार्चिता
सुता विराटस्य यथेन्द्रलक्ष्मीः ।
सुदर्शनीया प्रमुखे यशस्विनी
प्रीत्याब्रवीदर्जुनमायतेक्षणा ॥ ४ ॥

विराटकुमारी उत्तरा स्त्रियोंमें रत्नस्वरूपा और मनको प्रिय लगनेवाली थी। वह उस राजभवनमें इन्द्रकी साम्राज्य-लक्ष्मीके समान सम्मानित थी। उसके नेत्र बड़े-बड़े थे। वह यशस्विनी बाला सामनेसे देखने ही योग्य थी। वह अर्जुनसे प्रेमपूर्वक बोली—॥ ४ ॥

सुसंहतोरुं कनकोज्ज्वलत्वचं
पार्थः कुमारीं स तदाभ्यभाषत ।
किमागमः काञ्चनमाल्यधारिणि
मृगाक्षि किं त्वं त्वरितेव भामिनि ॥
किं ते मुखं सुन्दरि न प्रसन्न-
माचक्ष्व तत्त्वं मम शीघ्रमङ्गने ॥ ५ ॥

सुवर्णके समान सुन्दर एवं गौर त्वचा तथा सटी जाँघों-वाली कुमारी उत्तराको देखकर अर्जुनने पूछा—'सुवर्णकी माला धारण करनेवाली मृगलोचने ! भामिनि ! तुम क्यों उतावली-सी चली आ रही हो ? सुन्दरि ! आज तुम्हारा मुख प्रसन्न क्यों नहीं है ? अङ्गने ! मुझे शीघ्र सब बातें ठीक-ठीक बताओ' ॥५॥

वैशम्पायन उवाच

स तां दृष्ट्वा विशालाक्षीं राजपुत्रीं सखीं तथा ।
प्रहसन्नब्रवीद् राजन् किमागमनमित्युत ॥ ६ ॥
तमब्रवीद् राजपुत्री समुपेत्य नरर्षभम् ।
प्रणयं भावयन्ती सा सखीमध्य इदं वचः ॥ ७ ॥

वैशम्पायनजी कहते हैं—जनमेजय ! विशाल नेत्रों-वाली अपनी सखी राजकुमारी उत्तराकी ओर देखकर अर्जुनने

रहे हैं। परंतु अब मैं यहाँसे क्या कर सकता हूँ ? जब कि वहाँ उस **बृहन्नलेति विख्यातः पार्थस्यासीत् स सारथिः ॥ १६ ॥**

एते रथाश्चातिरथाश्च तुभ्यं
यथाप्रधानं नृप कीर्तिता मया ।
तथापरे येऽर्धरथाश्च केचित्
तथैव तेषामपि कौरवेन्द्र ॥ १४ ॥

राजन् ! इस प्रकार मैंने तुम्हारे इन मुख्य-मुख्य रथियों और अतिरथियोंका वर्णन किया है । इनके सिवा, जो कोई अर्धरथी हैं, उनका भी परिचय दिया है । कौरवेन्द्र ! इसी प्रकार पाण्डवपक्षके भी रथी आदिका दिग्दर्शन कराया गया है ॥

अर्जुनं वासुदेवं च ये चान्ये तत्र पार्थिवाः ।
सर्वांस्तान् वारयिष्यामि यावद् द्रक्ष्यामि भारत ॥ १५ ॥

भारत ! अर्जुन, श्रीकृष्ण तथा अन्य जो-जो भूपाल हैं, मैं उनमेंसे जितनोंको देखूँगा, उन सबको आगे बढ़नेसे रोक दूँगा ॥

पाञ्चाल्यं तु महाबाहो नाहं हन्यां शिखण्डिनम् ।
उद्यतेषुमथो दृष्ट्वा प्रतियुध्यन्तमाहवे ॥ १६ ॥

परंतु महाबाहो ! पाञ्चालराजकुमार शिखण्डीको धनुषपर बाण चढ़ाये युद्धमें अपना सामना करते देखकर भी मैं नहीं मारूँगा ॥ १६ ॥

लोकस्तं वेद यदहं पितुः प्रियचिकीर्षया ।
प्राप्तं राज्यं परित्यज्य ब्रह्मचर्यव्रते स्थितः ॥ १७ ॥

सारा जगत् यह जानता है कि मैं मिले हुए राज्यको पिताका प्रिय करनेकी इच्छासे ठुकराकर ब्रह्मचर्यके पालनमें दृढ़तापूर्वक लग गया ॥ १७ ॥

चित्राङ्गदं कौरवाणामाधिपत्येऽभ्यषेचयम् ।
विचित्रवीर्यं च शिशुं यौवराज्येऽभ्यषेचयम् ॥ १८ ॥

माता सत्यवतीके ज्येष्ठ पुत्र चित्राङ्गदको कौरवोंके राज्यपर और बालक विचित्रवीर्यको युवराजके पदपर अभिषिक्त कर दिया था ॥ १८ ॥

देवव्रतत्वं विज्ञाप्य पृथिवीं सर्वराजसु ।
नैव हन्यां स्त्रियं जातु न स्त्रीपूर्वं कदाचन ॥ १९ ॥

सम्पूर्ण भूमण्डलमें समस्त राजाओंके यहाँ अपने देवव्रतस्वरूपकी ख्याति कराकर मैं कभी भी किसी स्त्रीको अथवा जो पहले स्त्री रहा हो, उस पुरुषको भी नहीं मार सकता ॥ १९ ॥

स हि स्त्रीपूर्वको राजन् शिखण्डी यदि ते श्रुतः ।
कन्या भूत्वा पुमान् जातो न योत्स्ये तेन भारत ॥ २० ॥

राजन् ! शायद तुम्हारे सुननेमें आया होगा, शिखण्डी पहले 'स्त्रीरूप' में ही उत्पन्न हुआ था; भारत ! पहले कन्या होकर वह फिर पुरुष हो गया था; इसीलिये मैं उससे युद्ध नहीं करूँगा ॥ २० ॥

सर्वांस्त्वन्यान् हनिष्यामि पार्थिवान् भरतर्षभ ।
यान् समेष्यामि समरे न तु कुन्तीसुतान् नृप ॥ २१ ॥

भरतश्रेष्ठ ! मैं अन्य सब राजाओंको, जिन्हें युद्धमें पाऊँगा, मारूँगा; परंतु कुन्तीके पुत्रोंका वध कदापि नहीं करूँगा ॥ २१ ॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वणि रथातिरथसंख्यानपर्वणि द्विसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १७२ ॥

इस प्रकार श्रीमहाभारत उद्योगपर्वके अन्तर्गत रथातिरथसंख्यानपर्वमें एक सौ बहत्तरवाँ अध्याय पूरा हुआ ॥ १७२ ॥

(अम्बोपाख्यानपर्व)

त्रिसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः

अम्बोपाख्यानका आरम्भ—भीष्मजीके द्वारा काशिराजकी कन्याओंका अपहरण

दुर्योधन उवाच

किमर्थं भरतश्रेष्ठ नैव हन्याः शिखण्डिनम् ।
उद्यतेषुमथो दृष्ट्वा समरेष्वाततायिनम् ॥ १ ॥

दुर्योधनने पूछा—भरतश्रेष्ठ ! जब शिखण्डी धनुष-बाण उठाये समरमें आततायीकी भाँति आपको मारने आयेगा, उस समय उसे इस रूपमें देखकर भी आप क्यों नहीं मारेंगे ?

पूर्वमुक्त्वा महाबाहो पञ्चालान् सह सोमकैः ।
हनिष्यामीति गाङ्गेय तन्मे ब्रूहि पितामह ॥ २ ॥

महाबाहु गङ्गानन्दन ! पितामह ! आप पहले तो यह कह चुके हैं कि 'मैं सोमकोंसहित पञ्चालोंका वध करूँगा' (फिर आप शिखण्डीको छोड़ क्यों रहे हैं ?) यह मुझे बताइये ॥

भीष्म उवाच

शृणु दुर्योधन कथां सहैभिर्वसुधाधिपैः ।
यदर्थं युधि सम्प्रेक्ष्य नाहं हन्यां शिखण्डिनम् ॥ ३ ॥

भीष्मजीने कहा—दुर्योधन ! मैं जिस कारणसे समराङ्गणमें प्रहार करते देखकर भी शिखण्डीको नहीं मारूँगा, उसकी कथा कहता हूँ, इन भूमिपालोंके साथ सुनो ॥ ३ ॥

महाराजो मम पिता शान्तनुर्लोकविश्रुतः ।
दिष्टान्तमाप धर्मात्मा समये भरतर्षभ ॥ ४ ॥
ततोऽहं भरतश्रेष्ठ प्रतिज्ञां परिपालयन् ।
चित्राङ्गदं भ्रातरं वै महाराज्येऽभ्यषेचयम् ॥ ५ ॥

भरतश्रेष्ठ ! मेरे धर्मात्मा पिता लोकविख्यात महाराज शान्तनुका जब निधन हो गया, उस समय अपनी प्रतिज्ञाका पालन करते हुए मैंने भाई चित्राङ्गदको इस महान् राज्यपर अभिषिक्त कर दिया ॥ ४-५ ॥

तस्मिंश्च निधनं प्राप्ते सत्यवत्या मते स्थितः ।
विचित्रवीर्यं राजानमभ्यषिञ्चं यथाविधि ॥ ६ ॥

तदनन्तर जब चित्राङ्गदकी भी मृत्यु हो गयी, तब माता सत्यवतीकी सम्मतिसे मैंने विधिपूर्वक विचित्रवीर्यको राजाके पदपर अभिषेक किया ॥ ६ ॥

पाठ्यक्रम में पर्यावरण विषयक अवबोधन

३—वैकल्पिको विषयः 'क'-वर्गः

चतुर्थ प्रश्नपत्रम्	'क'-वर्गीयस्य	१००
पञ्चमं प्रश्नपत्रम्	,,	१००
षष्ठं प्रश्नपत्रम्	,,	१००

४—वैकल्पिको विषयः 'ख'वर्गः

सप्तमं प्रश्नपत्रम्	'ख'-वर्गीयस्य	१००
अष्टमं प्रश्नपत्रम्		१००

ऐच्छिकः अतिरिक्तो विषयः

एकं प्रश्नपत्रम्	अंग्रेजी, जर्मन, रूसी, फ्रेंच चीनी, तिब्बती भाषाणाम्	१००

अनिवार्यविषयः संस्कृतम्

प्रथमं प्रश्नपत्रम्— गद्यपद्यनाटकानाम् १००

(क) सिन्धुवादवृत्तम्—सम्पा.-श्रीबटुकनाथशास्त्री खिस्ते।
प्र. शारदा प्रकाशन संस्थान, वाराणसी ३०

(ख) अभिज्ञानशाकुन्तलम्—महाकविकालिदासकृतम् ७०

द्वितीयं प्रश्नपत्रम्— पद्यानुवादनिबन्धसंस्कृतीनाम् १००

अथवा

(केवलं वैदेशिकच्छात्राणां कृते)

(क) संक्षेपीकरणम्

(ख) विशदीकरणम् २०

(ग) अनुवादः—१. संस्कृतभाषातः हिन्दीभाषायाम् २०
२. हिन्दीभाषातः संस्कृतभाषायाम् १५

(घ) निबन्ध—भारतीय-संस्कृतिविषयक या साहित्यिक निबन्ध १५ ३०

सहायक पुस्तक—१. संक्षेपण कैसे करें—ले. शैलेन्द्र—पटना प्रकाशन।
२. हिन्दी रचना और अनुवाद। ले. डॉ. श्रीप्रसाद तथा रामअवध पाण्डेय, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

१. ऋग्वेदः

चतुर्थप्रश्नपत्रम् १००

(क) ऋग्वेदसंहितायाः प्रथमद्वितीयाध्याययोः सायणभाष्यम् भूमिकाभागवर्जितम् ५०

(ख) आश्वलायनगृह्यसूत्रे १-२ अध्यायौ नारायणवृत्तिसहितौ ५०

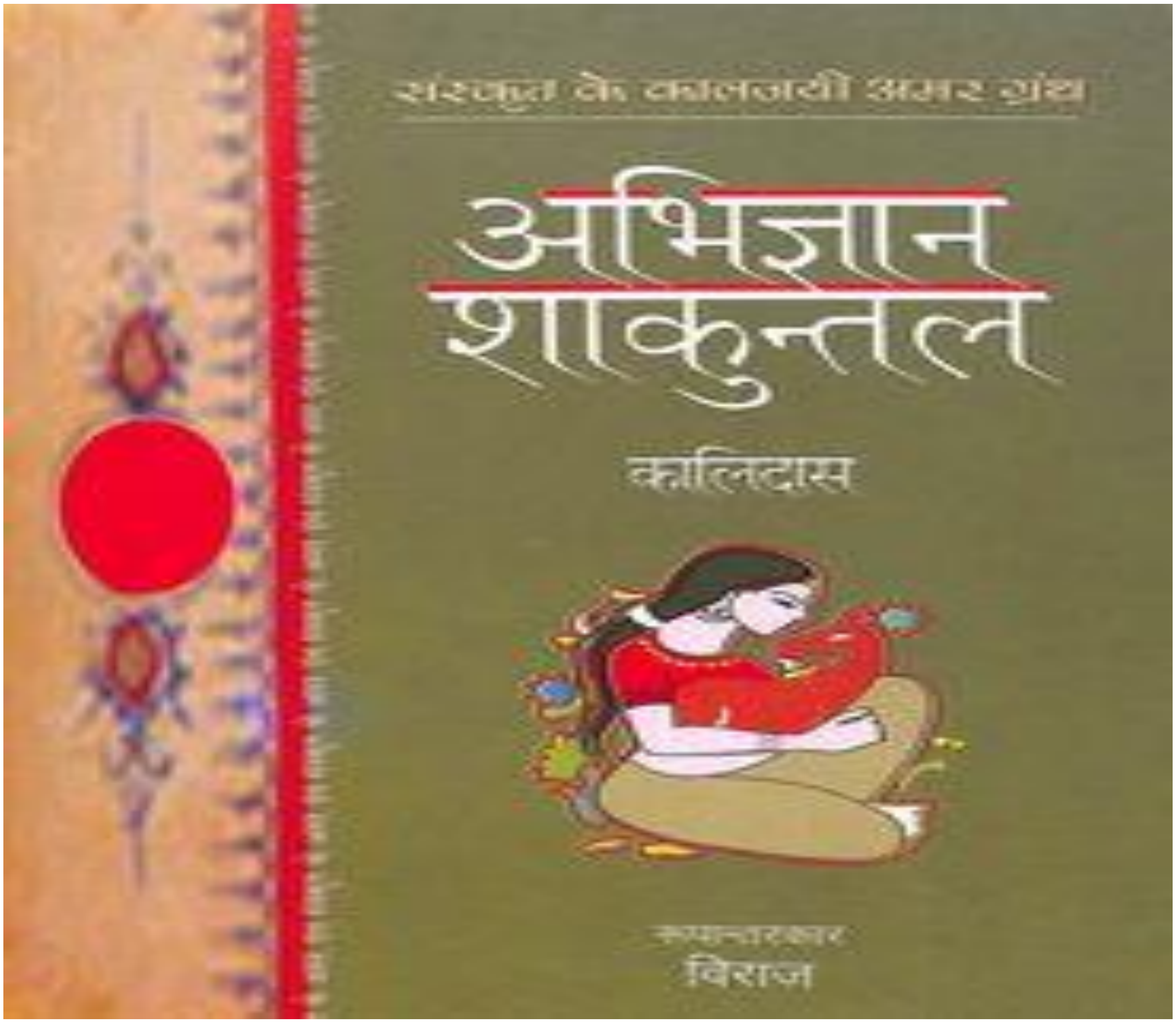

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

प्रथमोऽङ्कः

या सृष्टिः स्त्रष्टुराद्या, वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री
ये द्वे कालं विधत्तः श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्।
यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः ॥१॥

ओषधिसूक्त

*[ऋग्वेद दशम मण्डलका ९७वाँ सूक्त ओषधिसूक्त कहलाता है। इस सूक्तके ऋषि आथर्वण भिषग् तथा देवता ओषधि हैं, छन्द अनुष्टुप् है और सूक्तकी कुल ऋचाओंकी संख्या २३ है। इस सूक्तके आरम्भमें ही ऋषिने ओषधियोंको देवरूप मानकर उनसे रोगनिवारण करके आरोग्य तथा दीर्घायुष्यप्राप्तिकी प्रार्थना की है। इस सूक्तमें ओषधियोंका प्राकट्य देवताओंसे भी पूर्व बताया गया है—'**या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यः।**' ओषधियोंको माताके समान रक्षक तथा पालन-पोषण करनेवाली और अनन्तशक्तिसम्पन्ना बताया गया है। आरोग्यप्राप्तिकी दृष्टिसे इस सूक्तका बड़ा महत्त्व है। यहाँ मन्त्रोंका संक्षिप्त भावार्थ दिया जा रहा है—]*

या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा।
मनै नु बभ्रूणामहं शतं धामानि सप्त च॥ १॥
शतं वो अम्ब धामानि सहस्रमुत वो रुहः।
अधा शतक्रत्वो यूयमिमं मे अगदं कृत॥ २॥
ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः॥ ३॥

पाठ्यक्रम में स्थिरता विषयक अवबोधन

पञ्चमं प्रश्नपत्रम्	(साहित्यम्)	१००
(क) कुमारसम्भवम् ४, ५, ७ सर्गाः		४०
(ख) साहित्यदर्पणम् २-३ परिच्छेदौ		४०
(ग) भगवदज्जुकीयम्		२०
	अथवा	
(क) प्रत्यभिज्ञाहृदयम्		४०
(ख) श्रीमद्भागवतम्–(प्रथमस्कन्धः)		४०
(ग) मनुस्मृतिः–१-२ अध्यायौ		२०
षष्ठं प्रश्नपत्रम्–दर्शनम्		१००
(क) श्रीमद्भगवद्गीता एकादशत अष्टादशाध्यायपर्यन्ता		४०

शास्त्री प्रथमखण्डः ७

३–वैकल्पिको विषयः 'क'-वर्गः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्	'क'-वर्गीयस्य	१००
पञ्चमं प्रश्नपत्रम्	,,	१००
षष्ठं प्रश्नपत्रम्	,,	१००

४–वैकल्पिको विषयः 'ख'वर्गः

सप्तमं प्रश्नपत्रम्	'ख'-वर्गीयस्य	१००
अष्टमं प्रश्नपत्रम्		१००

ऐच्छिकः अतिरिक्तो विषयः

एकं प्रश्नपत्रम्	अंग्रेजी, जर्मन, रूसी, फ्रेंच चीनी, तिब्बती भाषाणाम्	१००

अनिवार्यविषयः संस्कृतम्

प्रथमं प्रश्नपत्रम्–	गद्यपद्यनाटकानाम्	१००
(क) सिन्धुवादवृत्तम्—सम्पा.-श्रीबटुकनाथशास्त्री खिस्ते। प्र. शारदा प्रकाशन संस्थान, वाराणसी		३०
(ख) अभिज्ञानशाकुन्तलम्—महाकविकालिदासकृतम्		७०
द्वितीयं प्रश्नपत्रम्–	पद्यानुवादनिबन्धसंस्कृतीनाम्	१००

अर्जुन उवाच

54. स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव ।
स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम् ॥

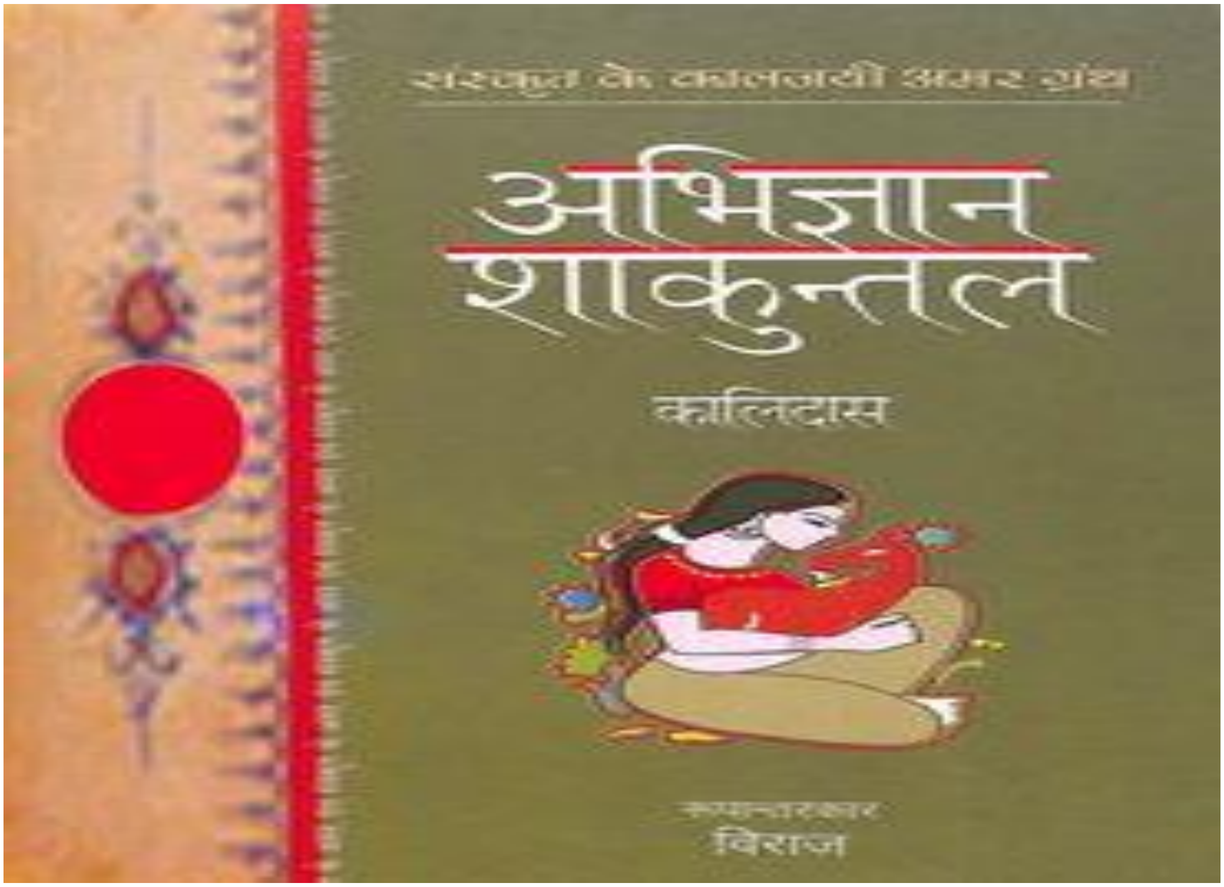

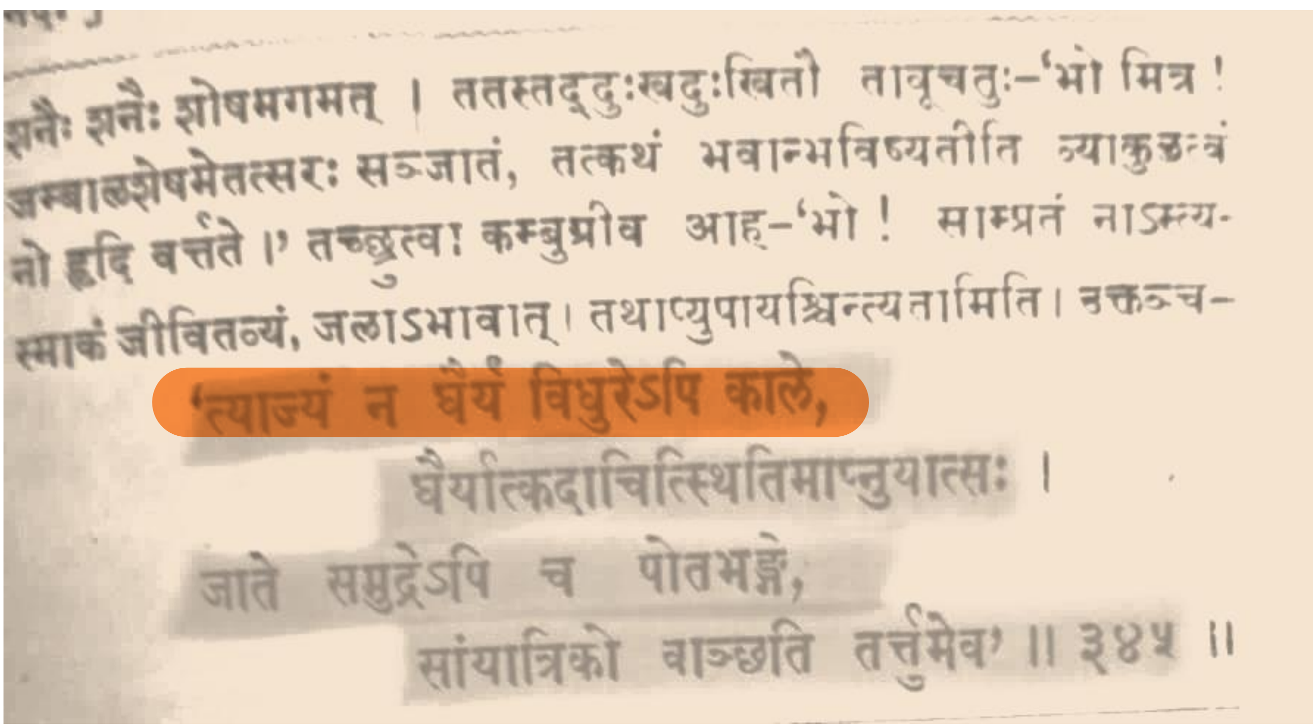
शनैः शनैः शोषमगमत् । ततस्तद्दुःखदुःखितौ तावूचतुः–'भो मित्र ! जम्बालशेषमेतत्सरः सञ्जातं, तत्कथं भवान्भविष्यतीति व्याकुलत्वं नो हृदि वर्त्तते ।' तच्छ्रुत्वा कम्बुग्रीव आह–'भो ! साम्प्रतं नाऽस्त्यस्माकं जीवितव्यं, जलाऽभावात्। तथाप्युपायश्चिन्त्यतामिति। उक्तञ्च–

'त्याज्यं न धैर्यं विधुरेऽपि काले,
धैर्यात्कदाचित्स्थितिमाप्नुयात्सः ।
जाते समुद्रेऽपि च पोतभङ्गे,
सांयात्रिको वाञ्छति तर्त्तुमेव' ॥ ३४५ ॥

पाठ्यक्रम में मानवीय मूल्य विषयक अवबोधन

१४. वेदान्तः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् — १००

वेदान्तपरिभाषा

सहायक ग्रन्थ प्रो. पारसनाथ द्विवेदी द्वारा सम्पादित सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् — १००

ईश-केन-कठ-मुण्डक-माण्डूक्य-तैत्तिरीय-ऐतरेयोपनिषदः स्व-स्वसम्प्रदायानुसारिव्याख्यासहिताः (विशेषः–छात्रैः प्रश्नोत्तरकाले स्वस्वसम्प्रदायटीकायाः स्वाभ्यस्तटीकाया वा निर्देशो विधेयः)

षष्ठं प्रश्नपत्रम् — १००

३–वैकल्पिको विषयः 'क'-वर्गः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्	'क'-वर्गीयस्य	१००
पञ्चमं प्रश्नपत्रम्	,,	१००
षष्ठं प्रश्नपत्रम्	,,	१००

४–वैकल्पिको विषयः 'ख' वर्गः

सप्तमं प्रश्नपत्रम्	'ख'-वर्गीयस्य	१००
अष्टमं प्रश्नपत्रम्		१००

ऐच्छिकः अतिरिक्तो विषयः

एकं प्रश्नपत्रम्	अंग्रेजी, जर्मन, रूसी, फ्रेंच चीनी, तिब्बती भाषाणाम्	१००

अनिवार्यविषयः संस्कृतम्

प्रथमं प्रश्नपत्रम्–	गद्यपद्यनाटकानाम्	१००

(क) सिन्धुवादवृत्तम्—सम्पा.-श्रीबटुकनाथशास्त्री खिस्ते। प्र. शारदा प्रकाशन संस्थान, वाराणसी — ३०

(ख) अभिज्ञानशाकुन्तलम्—महाकविकालिदासकृतम् — ७०

॥ श्रीहरिः ॥

513

मुण्डकोपनिषद्

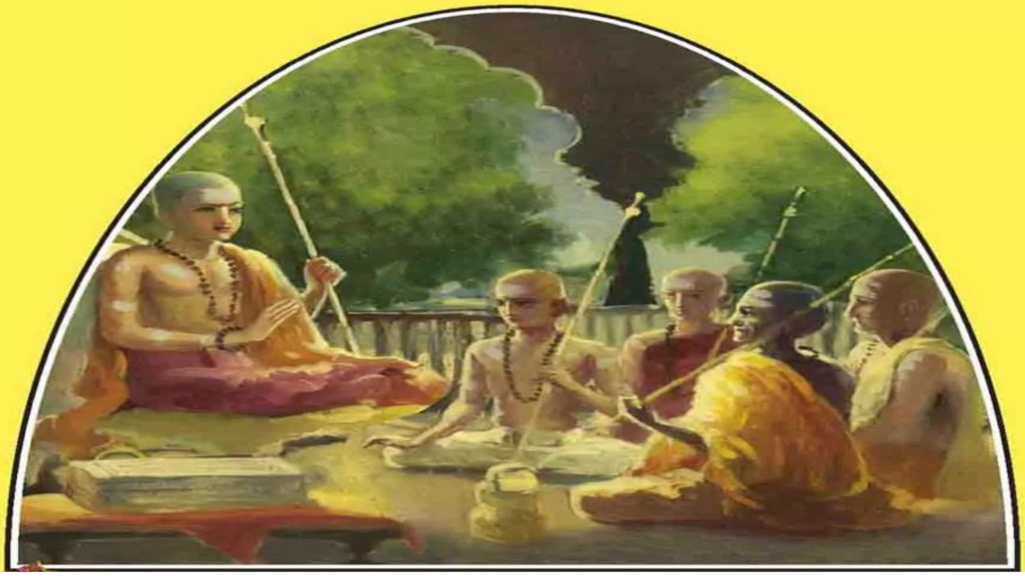

ही नहीं ॥ ५ ॥

सम्बन्ध—पूर्वोक्त साधनोंमेंसे सत्यकी महिमा बताते हैं—

सत्यमेव जयति नानृतं
सत्येन पन्था विततो देवयानः।
येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा
यत्र तत् सत्यस्य परमं निधानम् ॥ ६ ॥

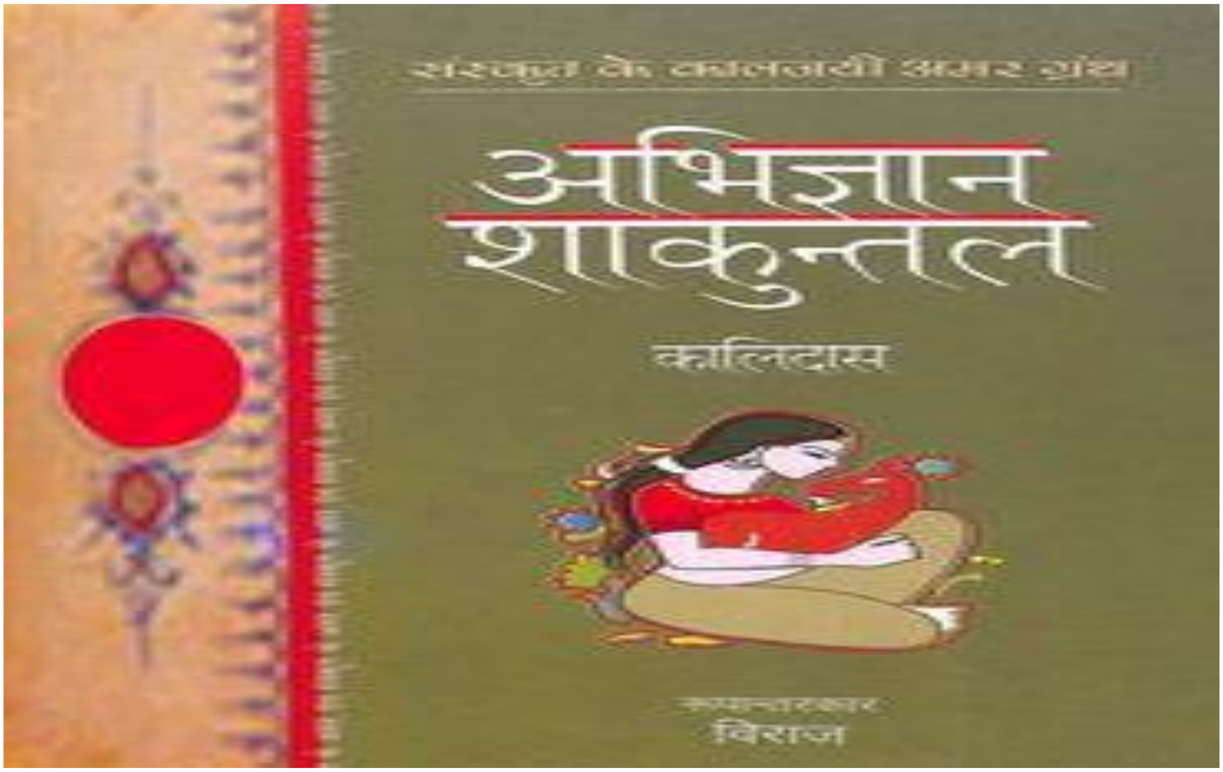

यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीना-
माविष्कृतोऽरुणपुरःसर[1] एकतोऽर्कः।
तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां
लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु[2] ॥२॥

पाठ्यक्रम में मानवीय वृत्ति नीति अवबोधन

१२. साङ्ख्ययोगः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्	**१०० **
(क) साङ्ख्यसारः (पूर्वभागः) विज्ञानभिक्षुकृतः	५०
(ख) साङ्ख्यतत्त्वप्रदीपः–वैकुण्ठशिष्ययतिकविराजयतिकृतः	५०
अथवा	
(ग) साङ्ख्यपरिभाषा	
पञ्चमं प्रश्नपत्रम्	**१००**
(क) सांख्यतत्त्वविवेचनम्–षिमानन्ददीक्षितकृतः	२५
(ख) तत्त्वसमाससूत्रवृत्तिः	२५
(ग) षट्चक्रनिरूपणम्	५०
षष्ठं प्रश्नपत्रम्	**१००**
(क) ईश-केन-कठ-तैत्तिरीय-ऐतरेय-श्वेताश्वरतर-उपनिषदः	५०
(ख) उपदेशसाहस्री (गद्यांशमात्रम्)	५०

१३. पूर्वमीमांसा

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्	**१००**
जैमिनीयन्यायमालायाः सविस्तरायाः १-२ अध्यायौ	

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् (साहित्यम्)	**१००**
(क) कुमारसम्भवम् ४, ५, ७ सर्गाः	४०
(ख) साहित्यदर्पणम् २-३ परिच्छेदौ	४०
(ग) भगवदज्जुकीयम्	२०
अथवा	
(क) प्रत्यभिज्ञाहृदयम्	४०
(ख) श्रीमद्भागवतम्–(प्रथमस्कन्धः)	४०
(ग) मनुस्मृतिः–१-२ अध्यायौ	२०
षष्ठं प्रश्नपत्रम्–दर्शनम्	**१००**
(क) श्रीमद्भगवद्गीता एकादशत अष्टादशाध्यायपर्यन्ता	४०

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् ।

तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः ॥

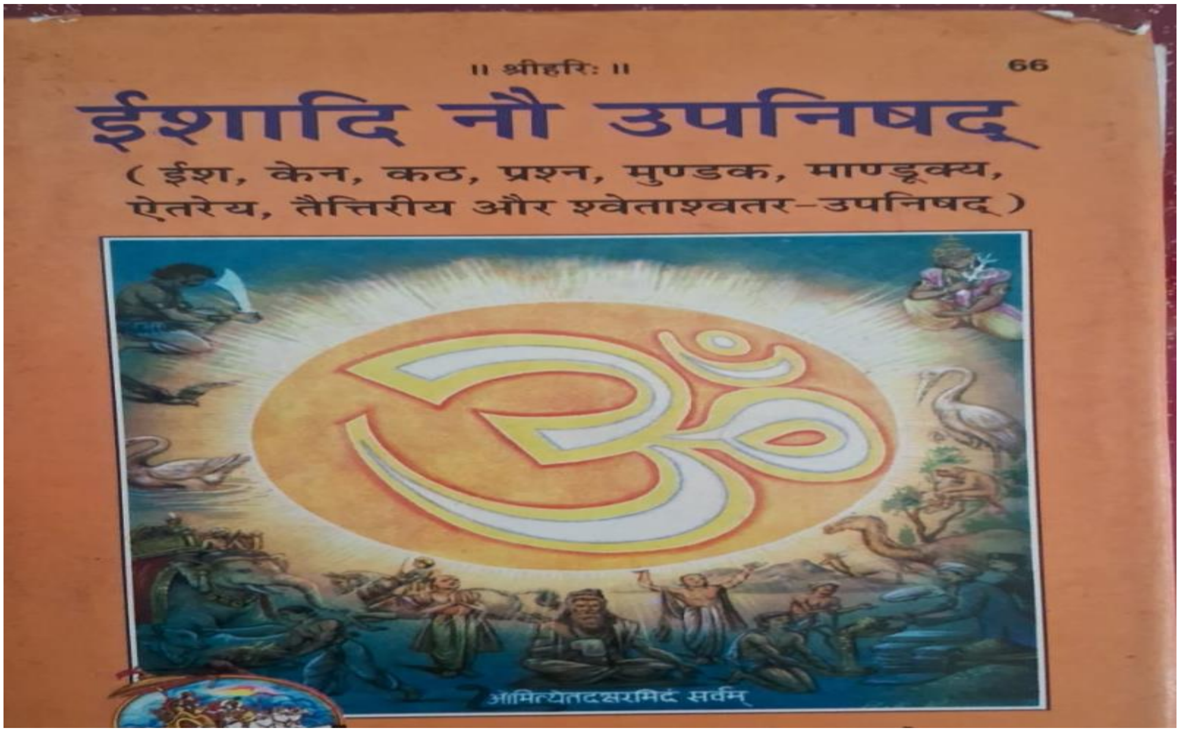

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै।

ईशा वास्यमिदँ सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद् धनम्॥ १॥

अवबोधन हेतु विविध गतिविधियाँ

विषयावबोध प्रबोधन एवं प्रोत्साहन कार्यक्रम के अन्तर्गत समायोजित कार्यक्रम में छात्रों को पुरस्कार प्रदान करते विश्वविद्यालय के कुलपति

विश्वविद्यालय द्वारा दि.०१.०१.२०२४ को विश्वविद्यालय के संस्थापक संस्थापक डॉ सम्पूर्णानन्द जी की जयन्ती का आयोजन

छात्र प्रबोधन एवं प्रोत्साहन कार्यक्रम

राष्ट्रीय एकता हेतु 'मेरी माटी मेरा देश' संकल्प कार्यक्रम

विविध सामाजिक प्रकल्प

कुलपति ने 263 गरीबों-असहायों को किया कंबल, स्वेटर वितरित

गरीबों को कंबल बांटते संस्कृत्त विवि कुलपति प्रो. बीएल शर्मा।

वाराणसी (जनवार्ता)। सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो बिहारी लाल शर्मा ने पाणिनि भवन सभागार में विश्वविद्यालय एवं राष्ट्रीय युवा चेतना मंच के संयुक्त तत्वावधान में गरीबों, असहायों को कंबल, स्वेटर वितरित किया। संस्था मे कार्यरत 263 चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों (संविदा एवं स्थायी कर्मी) जिसमें 233 पुरुष तथा 30 महिलाओं को उनके जरूरत के अनुसार गरम कपड़े स्वेटर और कंबल दिया गया। राष्ट्रीय युवा चेतना मंच के राष्ट्रीय संयोजक रोहित कुमार सिंह भी उपस्थित थे।

परिसर में संस्कृतमय वातावरण बनाने हेतु सूक्तियों का प्रचार प्रसार

विश्वविद्यालय के भित्तियों पर सांस्कृतिक छायांकन

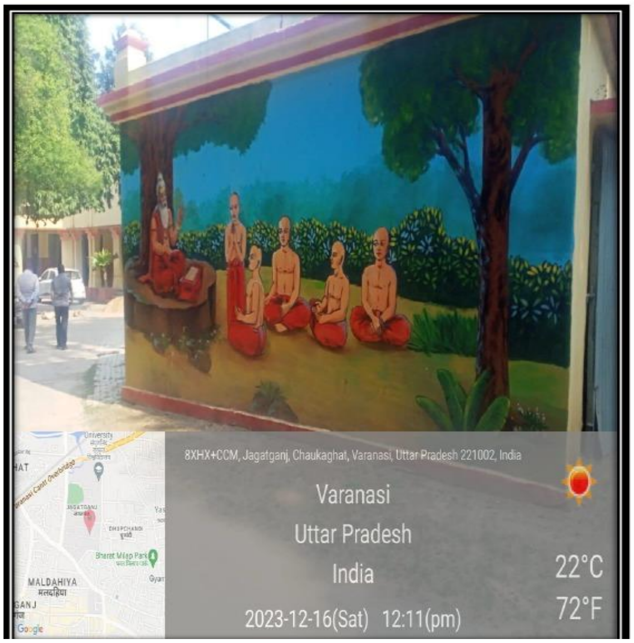

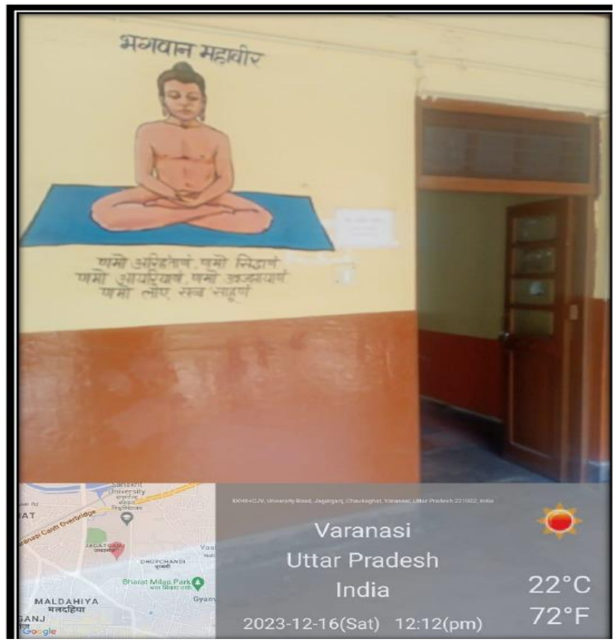

वृक्षारोपण कार्यक्रम

पर्यावरण संरक्षण एवं चेतना जागृत करने हेतु वृक्षारोपण करते
माननीय कुलपति एवं कुलसचिव महोदय

विश्वविद्यालय द्वारा उभयलिंगी (Transgander) समुदाय से संवाद स्थापन

उभयलिंगी व्यक्तियों की सूची

क्र.सं.	नाम	परिवर्तित नाम	मो0न0	पता	आवेदन की तिथि
1	आदित्य शर्मा	निहारिका पाण्डेय	6306067610	डी59 / 80 ए1 सिंगरा वाराणसी	28.09.2022
2	अदनान अली खॉन	जन्नत	6393227324	बी एल डब्लु प्रेट्रोल पम्प ककरमत्ता वाराणसी।	27.09.2022
3	मेहसान हसन अंसारी	जीशानी	9264958929	बी एल डब्लु प्रेट्रोल पम्प ककरमत्ता वाराणसी।	26.09.2022
4	मिथिलेष गिरी	मिनू	9984174275	प्लाट न071 पैगम्बरपुर सारनाथ वाराणसी।	06.05.2022
5	रणधीर यदुवंशी	रणधीर यदुवंशी	6307308863	ए38 / 45–1–बी–एच–4 कज्जाकपुरा कोनिया वाराणसी।	28.09.2022
6	आदर्श गुप्ता	आदर्श गुप्ता	6393817082	बी8 / 81 बड़ागम्भीरसिंह गौरीगंज वाराणसी।	29.09.2022
7	अब्दुल फैजल	अब्दुल फैजल	8468057130	बी26 / 35 नवाबगंज दुर्गाकुंड वाराणसी।	29.09.2022
8	तपन कुमार गांगुली	कोहिनुर	8299621च951	एन 10 / 47 ई–1 लखराव क्रासींग ककरमत्ता बजरडिहा वाराणसी।	29.09.2022
9	टिना किन्नर	टिना किन्नर	9305676708	एस 9 / 2–18–1 दैतराबीर हुकुलगंज पाण्डेपुर वाराणसी	25.11.2022
10	सोनाली	सोनाली	8303085235	एस 10 / 126 हुकुलगंज पाण्डेपुर वाराणसी	25.11.2022
11	सोनी	सोनी	9580806593	बी 34 / 146 एच–6 सरायनन्दन बजरडिहॉ	17.11.2022
12	रोहित सेठ	रोहित सेठ	638601205	डी 56 / 35 मीरबाग औरंगाबाद दुर्गामाता मंदिर छित्तुपुर वाराणसी	17.11.2022
13	सलमान चौधरी	सलमान उर्फ सलमा किन्नर	9335969440	बी 17 / 103 तीलभाण्डेष्वर भेलूपुर वाराणसी	17.11.2022
14	विनोद कुमार पटेल	विक्कि	6388202551	ए 38 / 451 बी–एच–4 कज्जाकपुरा वाराणसी	17.11.2022
15	रोशनी किन्नर	रोशनी किन्नर	9565010750	एस 10 / 128 एटी हुकुलगंज पाण्डेयपुर वाराणसी	17.11.2022
16	धन्नजय तिवारी	रिना तिवारी	9410411871	गुरवट राजापुर वाराणसी	17.11.2022
17	नवीन कुमार	नवीन कुमार	8577052129	नई बस्ती मण्डुवाडीह वाराणसी	17.11.2022
18	अनुपम मौर्या	अनुपमा मौर्या	8090428979	पूरनपुर,पुलकोहना, सारनाथ वाराणसी।	24.12.2022

Arun Ji

19	चन्दा बाबा	चन्दा बाबा	6387736950	एन012 / 1698 बड़ीपटिया बजरडीहा वाराणसी	25.04.2023
20	समीन	सब्बो	6387736950	न012 / 1698 बड़ीपटिया बजरडीहा वाराणसी	25.04.2023
21	समशेर खॉन	समशेर खॉन उर्फ शहनाज किन्नर	9598891191	एस–21 / 74 इंग्लिषिया लाईन कैन्ट वाराणसी।	25.04.2023
22	दीपक गुप्ता	दीपिका किन्नर	6386473074	बी–22 / 70 खोजवा बाजार वाराणसी।	25.04.2023
23	कार्ति सिंह	काजल सिंह	9026623340	बी–24 / 32 काश्मीरीगंज खोजवा वाराणसी।	25.04.2023
24	विकास सोनकर	वैशाली किन्नर	6393315106	डी–65 / 501 लहरतारा वाराणसी।	21.10.2023
25	रीना किन्नर	रीना किन्नर	9956431922	एस–9 / 143–ए –एसीएच –एस नई बस्ती पाण्डेयपुर वाराणसी।	14.10.2023
26	बनारसी किन्नर	बनारसी किन्नर	7905418701	फुलवरिया वाराणसी।	09.10.2023
27	कविता किन्नर	कविता किन्नर	–	आशापुर , सारनाथ वाराणसी।	14.09.203
28	कोमल मौर्या	कोमल मौर्या	7897480844	18 मानापुर , खालिसपुर वाराणसी।	14.09.2023
29	सोनू	सन्जू किन्नर	7084295185	डी–59 / 235 महमूरगंज निरालानगर, वाराणसी।	13.09.2023
30	विकास राजभर	विशाखा किन्नर	8840578161	ए–38 / 34 ए कोनिया वाराणसी।	12.09.2023
31	राहुल गुप्ता	रागिनी गुप्ता	9305233957	39 / 287 लाट भैरो वाराणसी।	11.09.2023

जिला समाज कल्याण अधिकारी,
वाराणसी।

Arun Ji

उभयलिंगी **(Transgander)** समुदाय से संवाद स्थापन के क्रम में उनके विवरण का संकलन

शैक्षिक प्रबोधन प्रकल्प

वाराणसी के खोजवॉ में स्थित उभयलिंगी समाज के प्रतिनिधयों से विश्वविद्यालय द्वारा संवाद स्थापन

दिनांक-२१.०३.२०२४

वराणसी के लहुराबीर में स्थित उभयलिंगी समाज के प्रतिनिधयों से संवाद स्थापन

दिनांक-२१.०३.२०२४

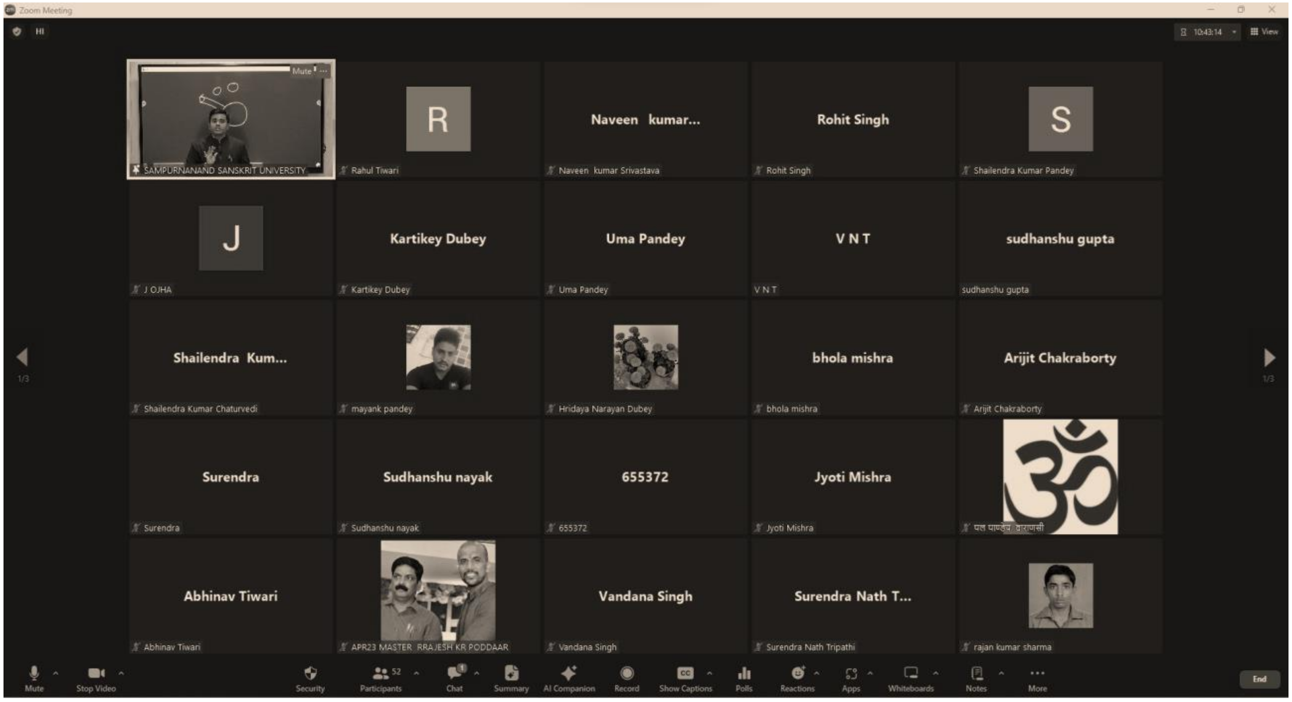

उभयलिंगी **(Transgander)** समुदाय से ऑनलाईन संवाद स्थापन का क्रम

दिनांक २२.०३.२०२४